IslamHouse.com

مركز أصول
Osoul Center
www.osoulcenter.com

हज्ज, उम्रह व मस्जिदे नबवी की ज़ियारत संबंधी गाइड

अनुवाद

ज़ाकिर हुसैन वरासतुल्लाह

सम्पादना

कुतबुल्लाह मुहम्मद व मुशताक़ अहमद करीमी

Hindi

الهندية

हिंदी

دليل الحاج والمعتمر
وزائر مسجد رسول الله ﷺ

ذاكر حسين وراثة الله

مراجع

قطب الله محمد
مشتاق أحمد كريمي

Hindi
الهندية
हिंदी

ح) المكتب التعاوني للدعوة والإرشاد و توعية الجاليات بالربوة، ١٤٤٠هـ

فهرسة مكتبة الملك فهد الوطنية أثناء النشر

وراثة الله، ذاكر حسين

دليل الحاج والمعتمر وزائر مسجد الرسول ﷺ. اللغة الهندية . / ذاكر حسين وراثة الله. -

الرياض، ١٤٤٠هـ

٨٠ ص، ١٢ سم x ١٦,٥ سم

ردمك : ٩٧٨-٦٠٣-٨٢٤٩-٣٥-٢

١- الحج ٢- العمرة ٣- زيارة المسجد النبوي أ. العنوان

ديوي ٢٥٢,٥ ١٤٤٠/١١٤٧٤

رقم الايداع: ١٤٤٠/١١٤٧٤

ردمك : ٩٧٨-٦٠٣-٨٢٤٩-٣٥-٢

مركز أصول
Osoul Center
www.osoulcenter.com

This book has been conceived, prepared and designed by the Osool International Centre. All photos used in the book belong to the Osool Centre. The Centre hereby permits all Sunni Muslims to reprint and publish the book in any method and format on condition that 1) acknowledgement of the Osool Centre is clearly stated on all editions; and 2) no alteration or amendment of the text is introduced without reference to the Osool Centre. In the case of reprinting this book, the Centre strongly recommends maintaining high quality.

+966 11 445 4900

+966 11 497 0126

P.O.BOX 29465 Riyadh 11457

osoul@rabwah.sa

www.osoulcenter.com

بسم الله الرحمن الرحيم

शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान (कृपालु)
निहायत रहम करने वाला (दयालु) है

विषय सूची

अनुवादक प्रवचन	9
भूमिका	11
महत्वपूर्ण अनुदेश	13
इस्लाम से ख़ारिज करने वाली बातें	17
हज्ज, उम्रह और मस्जिदे नबवी की ज़ियारत	23
उम्रह का तरीक़ा	25
हज्ज का विवरण	29
मुह्रिम के लिए ज़रूरी बातें	33
केवल पुरुष के लिए निषिद्ध (मम्नूअ्) चीज़ें	34
मस्जिदे नबवी की ज़ियारत	37
ग़लतियाँ जिनका इर्तिकाब बाज़ हाजी करते हैं	41
इह्राम की ग़लतियाँ	41
तवाफ़ की ग़लतियाँ	41
सई की ग़लतियाँ	43
अ़रफ़ात की ग़लतियाँ	44
मुज़्दलिफ़ा की ग़लतियाँ	44
रमी (कंकर मारने) की ग़लतियाँ	45
तवाफ़े विदाअ् की ग़लतियाँ	46
मस्जिदे नबवी की ज़ियारत की ग़लतियाँ	47
हज्ज, उम्रह तथा मस्जिदे नबवी की ज़ियारत संबंधी मुख़्तसर गाइड	49
दुआएं	57

अनुवादक प्रवचन

समस्त तारीफ़ व प्रशंसा उस महान ज़ात के लिए यथायोग्य (लाएक़ व ज़ेबा) है, जो सारे जहान का पालनहार है और अकेला इबादत का हक़्दार है। दुरूद व सलाम हो हमारे नबी मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह पर और उनके परिवार-परिजन (आल व औलाद) तथा उनके अस्हाब (साथियों) पर।

सऊदी अ़रब के चंद प्रवीण विद्वानों ने अ़रबी ज़बान में इस पुस्तिका की रचना की थी। और डाक्टर मुहम्मद लुक़्मान सलफ़ी ने उर्दू ज़बान में इसका अनुवाद किया। अल्लाह तआ़ला उक्त सारे उलमा को उत्तम पुरस्कार प्रदान करे। ज़रूरत अनुभव करते हुए अल्लाह की तौफ़ीक़ से इसका हिन्दी अनुवाद मुसलमानों की सेवा में पेश कर रहा हूँ।

मैं अपने मुसलमान भाईओं की ख़िद्मत में हिन्दी भाषा में “हज्ज, उम्रह तथा मस्जिदे नबवी की ज़ियारत संबंधी गाइड” नामक पुस्तिका पेश करते हुए अल्लाह का शुक्रगुज़ार हूँ कि उसने मुझे यह क्षुद्र सेवा करने की तौफ़ीक़ दी। यदि वे इससे उपकृत (मुस्तफ़ीद) हुए तो मेरे श्रम की स्वार्थ सिद्धी होगी इन्शाअल्लाह।

इंसान भूल-त्रुटि व ग़लतियों का पुतला है। अतः सम्मानित पाठक की दृष्टि में कोई ग़लती आने पर सूचित करने की गुज़ारिश है। अल्लाह तआ़ला से दुआ़ है कि वह मेरी इस कोशिश को मेरे लिए आख़िरत का संबल बनाए। आमीन।

ज़ाकिर हुसैन वरासतुल्लाह

भूमिका

समस्त प्रशंसा केवल एक अल्लाह के लिए है। और दुरूद व सलाम हो उन पर जिनके बाद कोई नबी नहीं। अर्थात हमारे नबी मुहम्मद बिन अ़ब्दुल्लाह पर और उनके आल व औलाद (परिवार-परिजन) तथा उनके अस्हाब (साथियों) पर। अम्मा बादः

सम्मानित हाजी भाईओ!

अस्सलामु अ़लैकुम व रह्मतुल्लाहि व बरकातुहु।

अल्लाह तआ़ला के मेहमान की हैसियत से पवित्र नगर और पाक भूमि में आपका आना शुभ (मुबारक) हो। हम आपको स्वागतम (ख़ुश आमदीद) कहते हैं।

अल्लाह के घर की ज़ियारत करने वाले हाजियों की सेवा में यह संक्षिप्त निर्देशिका जिस में हज्ज व उम्रह संबंधी अह्काम बयान किये गये हैं, पेश करते हुए मज्लिस तौइया इस्लामिया अत्यंत ख़ुशी महसूस करती है।

हम ने कुछ महत्वपूर्ण अनुदेश मूलक (नसीहत आमेज़) बातों से आरंभ किया है जो हम सबके लिए लाभदायक (मुफ़ीद) हैं। इस वक़्त हमारे सामने अल्लाह तआ़ला का यह फ़र्मान है, जिस में अल्लाह के बंदों में से मुक्ति पाने वालों और दुनिया व आख़िरत में सफल होने वालों के गुण (सिफ़ात) यूँ बयान किये गये हैं:

﴿وَتَوَاصَوۡاْ بِٱلۡحَقِّ وَتَوَاصَوۡاْ بِٱلصَّبۡرِ﴾ [سورة العصر: ٣]

"आपस में वह लोग एक दूसरे को हक़ (सच) बातों की और सब्र की नसीहत करते हैं।" (सूरह अल्-अस्रः ३)

और साथ ही अल्लाह के इस फ़रमान पर अ़मल करना भी उद्देश्य (मक़्सूद) है:

﴿وَتَعَاوَنُوا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوَىٰ ۖ وَلَا تَعَاوَنُوا عَلَى الْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ﴾ [سورة المائدة: ٢]

"नेकी और तक़्वा (परहेज़गारी) के कामों में एक दूसरे की मदद करते रहो, और नाफ़रमानी के कामों में एक दूसरे की मदद न करो।" (सूरह अल्-माइदाः २)

हमारी गुज़ारिश है कि आप हज्ज शुरू करने से पहले इस पुस्तिका को ज़रूर पढ़ें ताकि इस फ़रीज़ा को अच्छी तरह अदा कर सकें। इस पुस्तिका में इन्शाअल्लाह आपको बहुत से प्रश्नों के उत्तर मिल जायेंगे। हमारी दुआ है कि अल्लाह हम सबके हज्ज को क़बूल करे, हमारी कोशिश का अच्छा बदला दे और हमारे आमाल को नेक व मक़्बूल बनाए।

वस्सलामु अ़लैकुम व रह्मतुल्लाहि व बरकातुहु

महत्वपूर्ण अनुदेश

सम्मानित हाजी भाईओ!

अल्लाह का शुक्र है कि उसने आपको अपने घर (कअ़बा) की ज़ियारत की तौफ़ीक़ दी। हम दुआ़ करते हैं कि अल्लाह हमारी नेकियों को क़बूल करे और अज्र व सवाब को कई गुना करे।

हम यह नसीहतें पेश करते हुए दुआ़ करते हैं कि अल्लाह हमारे हज्ज को क़बूल करे और तवाफ़ व सई का बेहतरीन बदला दे।

१ यह बात याद रखनी चाहिए कि आप एक पवित्र यात्रा पर अल्लाह के रास्ते में हिजरत की नियत से निकले हैं जिसकी बुनियाद तौहीद, निष्कपटता (ख़ुलूसे नियत), अल्लाह की दअ़्वत पर लब्बैक और उसकी इताअ़त (आज्ञा पालन) पर है। इससे बड़ा किसी काम का अज्र नहीं कि हज्जे मब्रूर (मक़्बूल हज्ज) का बदला सिर्फ़ जन्नत है।

२ इस बात का ख़्याल रहे कि शैतान आपके बीच भिन्नता (इख़्तिलाफ़) पैदा न कर दे। क्योंकि वह तो ताक (घात) में बैठा हुआ शत्रु है। इस लिए अल्लाह की संतुष्टि के लिए एक दूसरे से महब्बत रखें, और लड़ाई-झगड़ा तथा अल्लाह की अवज्ञा (नाफ़रमानी) से बचते रहें। रसूलुल्लाह ﷺ का फ़रमान है:

«لَا يُؤْمِنُ أَحَدُكُمْ حَتَّى يُحِبَّ لأَخِيهِ مَا يُحِبُّ لِنَفْسِهِ».

“तुम में से कोई व्यक्ति उस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब

तक अपने भाई के लिए वह बात पसंद करे जो अपनी ज़ात के लिए पसंद करता है।"

३ अगर दीनी मसायेल व हज्ज के विषय में कोई समस्या पेश आये तो शिघ्र विद्वानों (उलमा) से संपर्क करें, ताकि ज्ञान व रोशनी उपलब्ध हो। क़ुर्आने पाक कहता है:

﴿فَسْـَٔلُوٓا۟ أَهْلَ ٱلذِّكْرِ إِن كُنتُمْ لَا تَعْلَمُونَ﴾ [سورة النحل: ٤٣]

"अगर तुम नहीं जानते हो तो विद्वानों से पूछ लिया करो।" (सूरह अन्नह्ल: ४३)

और रसूलुल्लाह ﷺ का फ़र्मान है:

«مَنْ يُرِدِ الله بِهِ خَيْرًا يُفَقِّهْهُ فِي الدِّينِ».

"जिसके लिए अल्लाह भलाई चाहता है उसे दीन की समझ प्रदान करता है।"

४ अल्लाह तआ़ला ने कुछ कामों को हमारे लिए फ़र्ज़, और कुछ को मस्नून व मुस्तहब किया है। जो व्यक्ति फ़राइज़ की पाबंदी नहीं करता उसके मस्नून आमाल क़बूल नहीं होते।

कुछ हाजी इस हक़ीक़त को भूल जाते हैं और हजरे अस्वद को चुंबन देते, तवाफ़ में रमल करते, मक़ामे इब्राहीम के पीछे नमाज़ पढ़ते और ज़म्ज़म् का पानी पीते समय दूसरे मुसलमान नर-नारी को कष्ट में डालते हैं, हालाँकि यह सब कार्य मस्नून हैं, और मोमिनों को कष्ट में डालना हराम है। फिर हम क्यों सुन्नत पालन करने के लिए हराम सम्पादन करें? एक दूसरे को कष्ट में न डालना हमारे लिए अत्यंत

आवश्यक है। अल्लाह आपको उत्तम बदला दे। विषय की अधिक जानकारी के लिए निम्नलिखित बातें उल्लेखयोग्य हैं:
(क) मुसलमान के लिए यह उचित नहीं कि हरम में या किसी और स्थान में महिला के बग़ल में अथवा उसके पीछे नमाज़ पढ़े। अगर इससे बचना संभव है तो ऐसा करना उचित नहीं। लेकिन महिलायें मर्दों के पीछे ही नमाज़ पढ़ें।

(ख) हरम शरीफ़ के दरवाज़े और मार्ग समूह (गुज़रगाहें) मुसलमानों के रास्ते हैं, उन में नमाज़ पढ़ना, और रास्तों के बंद हो जाने का कारण बनना सहीह नहीं, चाहे जमाअ़त ही क्यों न छूटे जा रही हो।

(ग) कअ़बा के आस पास बैठने, उसके क़रीब नमाज़ अदा करने अथवा हजरे अस्वद और मक़ामे इब्राहीम के पास रुकने के कारण (ख़ासकर भीड़ के समय) अगर लोगों के तवाफ़ करने में रुकावट पेश आती है तो ऐसा करना दुरुस्त नहीं है। क्योंकि इस में अ़ाम मुसलमानों को दुःख पहूँचाना है।

(घ) हजरे अस्वद को चुंबन देना सुन्नत है और मुसलमान का सम्मान फ़र्ज़ है। सुन्नत के लिए फ़र्ज़ को नष्ट करना किसी तरह भी दुरुस्त नहीं। भीड़ के समय हजरे अस्वद की ओर इंगित (इशारा) करना और तक्बीर (अल्लाहु अक्बर) कहते हुए आगे बढ़ जाना ही काफ़ी होगा। तवाफ़ के स्थान से निकलने के लिए लाईनों को चीरना और लोगों को धक्के देना किसी तरह उचित नहीं। बल्कि लोगों के साथ चलते हुए आराम से निकल जाना चाहिए।

(ङ) रुक्ने यमानी के सामने होते वक़्त अगर भीड़ न हो तो ‘बिस्मिल्लाहि वल्लाहु अक्बर’ कहकर केवल अपने दायें हाथ से स्पर्श

करे, बोसा न दे। और अगर उसका स्पर्श करना कठिन हो तो छोड़कर तवाफ़ करता रहे और रुक्ने यमानी की ओर न इशारा करे और न उसके सामने आकर अल्लाहु अक्बर कहे, क्योंकि यह नबी ﷺ से साबित नहीं है। रुक्ने यमानी और हजरे अस्वद के बीच यह दुआ पढ़नी मुस्तहब है:

﴿رَبَّنَآ ءَاتِنَا فِى ٱلدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِى ٱلْـَٔاخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ ٱلنَّارِ﴾

[سورة البقرة: ٢٠١]

“ऐ हमारे पालनहार! हमें इस संसार में भलाई प्रदान कर और परलोक (आख़िरत) में भी भलाई प्रदान कर और हमें नरक (जहन्नम) की यातना (अज़ाब) से बचा ले।”

और अंत में हम समस्त हाजी भाईओं को अल्लाह की किताब क़ुर्आन तथा रसूलुल्लाह ﷺ की सुन्नत के अनुसरण (इताअ़त) करने की नसीहत करते हैं। अल्लाह तआ़ला का फ़र्मान है:

﴿وَأَطِيعُوا۟ ٱللَّهَ وَٱلرَّسُولَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ﴾ [سورة آل عمران: ١٣٢]

“और अल्लाह और उसके रसूल की इताअ़त (आज्ञा पालन) करो ताकि तुम उसकी रह़मत के हक़्दार बनो।” (सूरह आलि इम्रान: १३२)

इस्लाम से ख़ारिज करने वाली बातें

इस्लामी भाईओ!

दस ऐसी बातें हैं जिन में से हर एक, इंसान को इस्लाम से बहिष्कार (ख़ारिज) कर देती है, और जिनका इर्तिकाब अधिकांश (अक्सर) लोगों से होता रहता है।

पहली बातः अल्लाह की इबादत में दूसरों को शरीक बनाना। अल्लाह तआला ने फ़रमायाः

﴿إِنَّهُۥ مَن يُشْرِكْ بِٱللَّهِ فَقَدْ حَرَّمَ ٱللَّهُ عَلَيْهِ ٱلْجَنَّةَ وَمَأْوَىٰهُ ٱلنَّارُ ۖ وَمَا لِلظَّـٰلِمِينَ مِنْ أَنصَارٍ﴾ [سورة المائدة: ٧٢]

"जिसने अल्लाह की इबादत में किसी को शरीक बनाया उस पर जन्नत हराम हो गई और उसका ठिकाना जहन्नम है, और ज़ालिमों का कोई मददगार न होगा।" (सूरह अल्-माइदाः ७२)

मुर्दों को पुकारना, उनसे मदद माँगना, नज़्र-नियाज़ देना और उनके नाम से ज़बह करना अल्लाह की इबादत में शिर्क करने के अंतर्गत (शामिल) हैं।

दूसरी बातः जिसने अल्लाह और अपने बीच किसी को सिफ़ारिशी बनाया, उसे पुकारा और उससे सिफ़ारिश की अपील की और उस पर भरोसा किया, वह बिल्इज्माअ् (सर्व सम्मत रूप से) काफ़िर हो गया।

तीसरी बातः जिसने मुश्रिकीन (अनेकेश्वरवादियों) को काफ़िर

नहीं समझा या उनके कुफ़्र में संदेह (शक) किया और उनके धर्म को सहीह समझा वह काफ़िर हो गया।

चौथी बातः जिसने यह विश्वास (एतेक़ाद) रखा कि किसी और की राह नबी करीम ﷺ की राह से अधिक पूर्ण व बेहतर है, या यह कि किसी और का विचार (फ़ैसला) आप ﷺ के फ़ैसले से श्रेष्ठ (बेहतर) है, जैसे वह लोग जो तागूती ताक़तों के क़ानूनों को आपके क़ानून पर फ़ौक़ियत देते हैं, वह काफ़िर है। उदाहरण स्वरूप (मसलन):

(क) यह विश्वास (एतेक़ाद) रखना कि इंसानों के बनाये हुए क़ानून और जीवन व्यवस्था इस्लामी शरीअ़त से बेहतर है, या यह कि बीसवीं शताब्दी में इस्लामी निज़ाम लागू करना मुम्किन नहीं, अथवा यह कि मुसलमानों के पतन (ज़वाल) का कारण इस्लाम था, अथवा यह कहना कि इस्लाम नाम है केवल उन शिक्षाओं का जो बंदे और अल्लाह के रिश्ते को स्पष्ट करता है, ज़िंदगी के अन्य विषय में उसका कोई दख़ल नहीं।

(ख) यह कहना कि चोर का हाथ काटना, या विवाहित व्यभिचारी (शादीशुदा ज़ानी) को संगसार (प्रस्ताराघात करके हत्या) करना वर्तमान युग के उपयोगी (मौजूदा दौर में मुनासिब) नहीं।

(ग) यह विश्वास रखना कि शरई मामले, अल्लाह के हुदूद (दंडविधि) या इनके अलावा कामों में ग़ैर इस्लामी क़ानून के अनुसार फ़ैसला करना जायज़ है (अगरचे उसका अ़क़ीदा न हो कि उक्त ग़ैर इस्लामी क़ानून इस्लामी शरीअ़त से बेहतर हैं) क्योंकि उम्मत के इज्माअ़ के अनुसार जिस चीज़ को अल्लाह ने हराम किया है, उसे उसने जायज़ कर दिया। और जो कोई अल्लाह के हराम किये हुए चीज़ों को –जो दीन के अनिवार्य अंश हैं, जैसे ज़िना (बलातकारी), शराबख़ोरी, सूद और

ग़ैर इस्लामी क़ानून लागू करना इत्यादि- हलाल करेगा, वह सर्व सम्मत रूप से काफ़िर है।

पाँचवीं बातः जिस किसी ने रसूलुल्लाह ﷺ की लाई हुई बातों में से किसी बात को बुरा समझा वह काफ़िर हो गया। (चाहे वह उस पर अमल ही क्यों न करे) क्योंकि अल्लाह तआ़ला का फ़रमान है:

﴿ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَرِهُوا مَا أَنزَلَ اللَّهُ فَأَحْبَطَ أَعْمَالَهُمْ ﴾ [سورة محمد: ٩]

"यह इस लिए कि उन्हों ने बुरा समझा जो अल्लाह ने अवतीर्ण (नाज़िल) किया तो उसने उनके आमाल को बरबाद कर दिया।" (सूरह मुहम्मदः ९)

छठी बातः जिसने अल्लाह का, या उसकी किताब का, या उसके रसूल का, या दीन के किसी बात का उपहास (मज़ाक़) किया वह काफ़िर हो गया अल्लाह तआ़ला के इस फ़रमान के अनुसारः

﴿قُلْ أَبِاللَّهِ وَآيَاتِهِ وَرَسُولِهِ كُنتُمْ تَسْتَهْزِئُونَ ﴿٦٥﴾ لَا تَعْتَذِرُوا قَدْ كَفَرْتُم بَعْدَ إِيمَانِكُمْ﴾ [سورة التوبة: ٦٥-٦٦]

"(ऐ नबी!) आप कह दीजिए कि तुम लोग अल्लाह, उसकी आयतों और उसके रसूल का मज़ाक़ उड़ाया करते थे। तुम बहाने न बनाओ, निःसंदेह तुम अपने ईमान लाने के बाद बेईमान हो गए।" (सूरह अत्तौबाः ६५-६६)

सातवीं बातः जादू, पति व पत्नी के बीच घृणा सृष्टि (नफ़रत पैदा) करना, अथवा शैतानी साधनों (वसीले) से मनुष्य के हृदय में ऐसी वस्तु की आकांक्षा (ख़ाहिश) डाल देना, वास्तव में जिसे वह नहीं चाहता। अतः जो व्यक्ति ऐसा करेगा वह कुफ़्र के सीमा में प्रवेश कर जायेगा। अल्लाह तआ़ला का फ़रमान है:

﴿وَمَا يُعَلِّمَانِ مِنْ أَحَدٍ حَتَّىٰ يَقُولَآ إِنَّمَا نَحْنُ فِتْنَةٌ فَلَا تَكْفُرْ﴾ [سورة البقرة: ١٠٢]

"वह दोनों किसी व्यक्ति को उस समय तक (जादू) न सिखाते थे जब तक वे यह न कह दें कि हम तो एक परीक्षा (फ़ितना) हैं, तू कुफ्र न कर।" (सूरह अल्-बक़रा: १०२)

आठवीं बात: मुशरिकीन का समर्थन करना और मुसलमानों के ख़िलाफ़ उनकी मदद करना। अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया:

﴿وَمَن يَتَوَلَّهُم مِّنكُمْ فَإِنَّهُۥ مِنْهُمْ ۗ إِنَّ ٱللَّهَ لَا يَهْدِى ٱلْقَوْمَ ٱلظَّٰلِمِينَ﴾ [سورة المائدة: ٥١]

"तुम में से जो कोई भी इनसे मित्रता करे तो वह उन में से है, अत्याचारियों को अल्लाह तआ़ला हरगिज़ हिदायत नहीं देता।" (सूरह अल्-माइदा: ५१)

नवीं बात: जिसका यह अक़ीदा हो कि कुछ लोगों को मुहम्मदी शरीअ़त के सीमा अतिक्रम (तजावुज़) करने की अनुमति होती है वह काफ़िर है। क़ुर्आने करीम में है:

﴿وَمَن يَبْتَغِ غَيْرَ ٱلْإِسْلَٰمِ دِينًا فَلَن يُقْبَلَ مِنْهُ وَهُوَ فِى ٱلْءَاخِرَةِ مِنَ ٱلْخَٰسِرِينَ﴾ [سورة آل عمران: ٨٥]

"और जो व्यक्ति इस्लाम के अतिरिक्त किसी अन्य धर्म की खोज करे उसका धर्म मान्य नहीं होगा और वह आख़िरत में क्षतिग्रस्ताओं (घाटा उठाने वालों) में होगा।" (सूरह आलि इम्रान: ८५)

दसवीं बात: अल्लाह के दीन से विमुखता (एराज़) या किसी ऐसी बात से विमुखता जिसके बिना शुद्ध इस्लाम को पाना असंभव हो, (और विमुखता की यह सूरत होगी कि न वह सीखने का इच्छुक हो

और न उस पर अमल करने का) इस्लाम से निकाल कर कुफ़्र में पहूँचाने वाली बात है। क्योंकि अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है:

﴿وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّن ذُكِّرَ بِـَٔايَٰتِ رَبِّهِۦ ثُمَّ أَعْرَضَ عَنْهَآ ۚ إِنَّا مِنَ ٱلْمُجْرِمِينَ مُنتَقِمُونَ﴾

[سورة السجدة: ٢٢]

“और उससे बढ़कर अत्याचारी कौन है जिसको अल्लाह तआ़ला की याद दिलाई जाये तो वह उनसे मुख फेर ले, निश्चय (बेशक) हम अपराधियों से बदला लेने वाले हैं।” (सूरह अस्सजदाः २२)

दूसरी जगह इरशद फ़रमायाः

﴿وَٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ عَمَّآ أُنذِرُوا۟ مُعْرِضُونَ﴾ [سورة الأحقاف: ٣]

“और काफ़िर लोग जिस वस्तु से डराये जाते हैं उससे मुख मोड़ लेते हैं।” (सूरह अल्-अह्क़ाफ़ः ३)

इस्लाम से बहिष्कार करने वाली बातों में मज़ाक़, हक़ीक़त व डर सभी बराबर हैं। केवल वह व्यक्ति अलग है जिसने कठिन विवशता (मजूबूरी) की हालत में इन में से किसी का इर्तिकाब किया हो। हम अल्लाह के ग़ज़ब और सज़ा से पनाह माँगते हैं।

हज्ज, उम्रह और मस्जिदे नबवी की ज़ियारत

मुसलमान भाईओ!

हज्ज तीन प्रकार का होता है:

१ तमत्तुअ़,

२ क़िरान,

३ इफ़्राद।

तमत्तुअ़ हज्ज की तअ़रीफ़ (परिचय):

हज्ज के महीनों (शव्वाल, ज़ुल्क़ेदा और ज़ुल्हिज्जा) में उम्रह का इह्राम बाँधना। उम्रह से फ़ारेग़ होने के बाद इह्राम खोल कर प्रतीक्षा (इंतिज़ार) करना और फिर उसी साल आठवीं ज़ुल्हिज्जा को मक्का मुकर्रमा या उसके क़रीब से हज्ज का इह्राम बाँधना।

क़िरान हज्ज की तअ़रीफ़ (परिचय):

हज्ज और उम्रह दोनों का एक साथ इह्राम बाँधना। ऐसी स्थिति में हाजी क़ुर्बानी के दिन ही हज्ज और उम्रह दोनों से हलाल होगा। दूसरी सूरत यह है कि पहले तो उम्रह की नियत करे फिर तवाफ़ शुरू करने से पहले हज्ज की नियत भी उस में दाख़िल कर ले।

इफ़्राद हज्ज की तअ़रीफ़ (परिचय):

हज्ज के महीनों में मीक़ात से केवल हज्ज की नियत करना, या अपने

घर ही से अगर वह मीक़ात सीमा के अंदर हो, या मक्का मुकर्रमा से अगर वहाँ मुक़ीम हो।

फिर अगर उसके पास क़ुर्बानी का जानवर है तो दसवीं तारीख़ तक इह्राम की हालत में बाक़ी रहेगा। और अगर क़ुर्बानी का जानवर साथ नहीं लाया है तो हज्ज की नियत को उम्रह में बदल देना जायज़ होगा। ऐसी हालत में तवाफ़ और सई के बाद बाल कटवा कर हलाल हो जायेगा। इस लिए कि जिन लोगों ने सिर्फ़ हज्ज की नियत की और अपने साथ क़ुर्बानी का जानवर नहीं लाये थे, उनको अल्लाह के रसूल ﷺ ने यही हुक्म दिया था।

इसी तरह अगर हज्जे क़िरान की नियत करने वाले के पास क़ुर्बानी का जानवर नहीं है तो वह भी हज्ज की नियत को उम्रह में बदल देगा।

और सबसे अफ़्ज़ल हज्ज हज्जे तमत्तुअ् है, उनके लिए जो क़ुर्बानी का जानवर साथ न लाया हो। इस लिए कि नबी करीम ﷺ ने सहाबा किराम को ऐसा ही हुक्म दिया और ताकीद फ़रमाई।

उम्रह का तरीक़ा

१ मीक़ात पर पहुँचने के बाद स्नान (गुस्ल) करें और संभव हो तो सुगंध (खुशबू) लगायें और फिर इह्राम के कपड़े (लुंगी और चादर) पहन लें। बेहतर यह है कि दोनों कपड़े सफ़ेद हों। महिलायें किसी भी प्रकार का कपड़ा पहन सकती हैं, मगर शर्त यह है कि बेपर्दगी और शोभा प्रकाश न हो। और न ही उन कपड़ों में मर्दों से या काफ़िर औ़रतों के पोशाक से कोई अनुरूपता (मुशाबहत) हो। फिर उम्रह के इह्राम की नियत करें और कहें:

«لَبَّيْكَ عُمْرَةً، لَبَّيْكَ اللَّهُمَّ لَبَّيْكَ، لَبَّيْكَ لَا شَرِيكَ لَكَ لَبَّيْكَ، إِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَكَ وَالْمُلْكَ لَا شَرِيكَ لَكَ».

उच्चारण: “लब्बैक उमूरतन, लब्बैकल्लाहुम्म लब्बैक, लब्बैक ला शरीक लक लब्बैक, इन्नल् हम्द वन्निअ़्मत लक वल्मुल्क ला शरीक लक।”

अर्थ: “मैं उम्रह लेकर हाज़िर हूँ, मैं हाज़िर हूँ हे अल्लाह मैं हाज़िर हूँ, मैं हाज़िर हूँ, तेरा कोई शरीक नहीं, मैं हाज़िर हूँ, निःसंदेह प्रशंसा, नेअ़्मतें और बादशाही तेरे ही लिए हैं, तेरा कोई शरीक नहीं।”

पुरुष इन शब्दों को ऊँची आवाज़ से कहेगा और महिलायें धीमी आवाज़ से। फिर अधिक से अधिक तल्बिया, अल्लाह का ज़िक्र और इस्तिग़फ़ार में मश्गूल रहें, लोगों को भलाई का हुक्म देते रहें और बुराई से रोकते रहें।

२ मक्का मुकर्रमा पहुँचने के बाद कअ़बा के सात चक्कर लगायें। हजरे अस्वद के पास से तक्बीर के साथ आरंभ होना चाहिए और अंत भी वहीं होगा। तवाफ़ के दौरान अल्लाह का ज़िक्र और विभिन्न दुआ़ओं में व्यस्त (मश्ग़ूल) रहना चाहिए। और सुन्नत यह है कि हर चक्कर में रुक्ने यमानी और हजरे अस्वद के दर्मियान यह दुआ़ पढ़ें:

﴿رَبَّنَآ ءَاتِنَا فِى ٱلدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِى ٱلْءَاخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ ٱلنَّارِ﴾

[سورة البقرة: ٢٠١]

"ऐ हमारे पालनहार! हमें इस संसार में भलाई प्रदान कर और परलोक (आख़िरत) में भी भलाई प्रदान कर और हमें नरक (जहन्नम) की यातना (अज़ाब) से बचा ले।"

फिर अगर संभव हो तो मक़ामे इब्राहीम के पीछे अन्यथा मस्जिद में किसी दूसरी जगह दो रक्अ़त नमाज़ पढ़ें।

इस तवाफ़ में मर्दों के लिए इज़्तिबाअ़् करना सुन्नत है। अर्थात चादर का दर्मियानी हिस्सा (मध्यामंश) दायें बग़ल के नीचे और उसके दोनों किनारों को बायें कंधे के ऊपर कर ले। और यह भी सुन्नत है कि सिर्फ़ शुरू के तीन चक्करों में रमल करे। (छोटे छोटे क़दम से तेज़ चलने को रमल कहते हैं।)

३ इसके बाद सफ़ा पहाड़ी की तरफ़ जायें। उस पर चढ़ कर अल्लाह तआ़ला का यह कलाम पढ़ें:

﴿إِنَّ ٱلصَّفَا وَٱلْمَرْوَةَ مِن شَعَآئِرِ ٱللَّهِ﴾ [سورة البقرة: ١٥٨]

"अवश्य सफ़ा एवं मर्वा अल्लाह की निशानियों में से है।" (सूरह अल्-बक़रा: १५८)

फिर क़िब्ला की तरफ़ रुख़ करें, अल्लाह की प्रशंसा (हम्द व सना) करें और दोनों हाथ उठा कर तीन बार अल्लाहु अक्बर कहें और दुआ़ करें। दुआ़ को तीन बार दोहराना सुन्नत है, और यह भी तीन बार पढ़ें:

«لاَ إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لاَ شَرِيْكَ لَهُ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ. لاَ إِلَهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ أَنْجَزَ وَعْدَهُ وَنَصَرَ عَبْدَهُ وَهَزَمَ الأَحْزَابَ وَحْدَهُ».

उच्चारण: "ला इलाह इल्लल्लाहु वह्दहु ला शरीक लहु लहुल्मुल्कु व लहुल्हम्दु व हुव अ़ला कुल्लि शैइन क़दीर। ला इलाह इल्लल्लाहु वह्दहु अन्जज़ वअ़्दहु व नसर अ़ब्दहु व हज़मल् अह्ज़ाब वह्दहु।"

अर्थ: "अल्लाह के सिवा कोई हक़ीक़ी माबूद नहीं है, वह अकेला है, उसका कोई शरीक नहीं, सारी बादशाही और तअ़रीफ़ें उसी के लिए हैं, और वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है। अल्लाह के सिवा कोई हक़ीक़ी माबूद नहीं है, वह अकेला है, उसने अपना वादा (प्रतिज्ञा) पूरा किया, अपने बंदे की मदद फ़रमाई और सारे लशकरों को तन्हा शिकस्त दी (पराजित किया)।"

तीन बार से कम पढ़ने में भी कोई दोष नहीं। फिर पहाड़ी से उतर कर सात बार सई करें। हर बार दोनों हरे निशानों के बीच तेज़ चलें और इसके आगे व पीछे स्वाभाविक चाल चलें (हसबे आदत चलें)। मर्वा पहाड़ी पर भी चढ़ें, अल्लाह की प्रशंसा करें और वही कुछ करें जो सफ़ा पहाड़ी पर किया था, और संभव हो तो तक्बीर भी कहें। तवाफ़ और सई के लिए कोई निर्दिष्ट (ख़ास) दुआ़ नहीं है, बल्कि जो भी ज़िक्र व तस्बीह और दुआ़ याद हो पढ़ें, और क़ुरआन की तिलावत करें। लेकिन नबी करीम ﷺ से प्रमाणित अज़्कार और दुआ़ओं की तरफ़ विशेष ध्यान रखें।

४ सई पूरी हो जाने के बाद सिर के बाल मुंडवायें अथवा छोटा करवायें। अब उम्रह सम्पूर्ण (मुकम्मल) हो गया और इह्राम के कारण जो चीज़ें हराम हो गई थीं वह सब हलाल हो गईं।

यदि तमत्तुअ़ हज्ज की नियत थी या क़िरान की तो क़ुर्बानी के दिन एक बकरी अथवा ऊँट या गाय के सप्तमांश (सातवें हिस्सा) की क़ुरबानी आवश्यक होगी। अगर किसी को सुलभ (मयस्सर) नहीं तो फिर दस रोज़े रखने हुंगे, तीन रोज़े हज्ज के दिनों में और सात रोज़े घर वापसी के बाद। अ़रफ़ा दिवस से पूर्व ही तीनों रोज़े रख लेना बेहतर है। और अगर ईद के बाद तीन रोज़े रखे तो भी कोई हरज नहीं।

हज्ज का विवरण

१ यदि आप ने इफ़राद अथवा क़िरान हज्ज की नियत की है तो हज्ज की नियत उस मीक़ात (इह्राम बाँधने का स्थान) से करें जहाँ से आपका गुज़र हो। और अगर आपका स्थान मीक़ात सीमा के भीतर हो तो अपने स्थान से नियत करें। यदि नियत तमत्तुअ़ हज्ज की थी तो अष्टम (आठवीं) ज़ुल्हिज्जा को अपने अवस्थान स्थल (क़ियामगाह) से ही नियत करें। संभव हो तो स्नान (ग़ुस्ल) करें, सुगंध (ख़ुशबू) लगायें और इह्राम के कपड़े पहन लें, फिर कहें:

«لَبَّيْكَ حَجَّةً، لَبَّيْكَ اللَّهُمَّ لَبَّيْكَ، لَبَّيْكَ لَا شَرِيكَ لَكَ لَبَّيْكَ، إِنَّ الْحَمْدَ وَالنِّعْمَةَ لَكَ وَالْمُلْكَ لَا شَرِيكَ لَكَ».

उच्चारणः "लब्बैक हज्जतन, लब्बैकल्लाहुम्म लब्बैक, लब्बैक ला शरीक लक लब्बैक, इन्नल् हम्द वन्निअ़मत लक वल्मुल्क ला शरीक लक।"

अर्थः "मैं हज्ज लेकर हाज़िर हूँ, मैं हाज़िर हूँ हे अल्लाह मैं हाज़िर हूँ, मैं हाज़िर हूँ, तेरा कोई शरीक नहीं, मैं हाज़िर हूँ, निःसंदेह प्रशंसा, नेअ़मतें और बादशाही तेरे ही लिए हैं, तेरा कोई शरीक नहीं।"

२ फिर मिना के लिए रवाना हो जायें। वहाँ ज़ोह्र, अस्र, मग़रिब, इशा और फ़ज्र की नमाज़ें पढ़ें। चार रकअ़त वाली नमाज़ें दो रकअ़त, अपने अपने समय में जमा (एकत्रित) किये बिना पढ़ें।

३ नौ तारीख़ को सूर्य उदय (सूरज तुलूअ़) होने के बाद शांति-प्रशांति के साथ (पुर सुकून अंदाज़ में) अ़रफ़ात के लिए रवाना हो जायें। दूसरे

हाजियों को कष्ट न दें। वहाँ ज़ोहर और अस्र की नमाज़ एक अज़ान और दो एक़ामतों के साथ अदा करें। फिर अ़रफ़ात के हुदूद (सीमा) में दाख़िल हो जाने का यक़ीन कर लें। और नबी करीम ﷺ की पैरवी में चेहरा क़िब्ला की ओर करके दोनों हाथों को उठा कर अधिक से अधिक ज़िक्र व दुआ में मश्गूल हो जायें। अ़रफ़ा का मैदान पूरा का पूरा ठहरने (वक़ूफ़) का मक़ाम है। सूर्य अस्त (सूरज ग़ुरूब) होने तक हुदूदे अ़रफ़ात में ही ठहरे रहना चाहिए।

४ सूरज अस्त (ग़ुरूब) होने के बाद तल्बिया (लब्बैकल्लाहुम्म लब्बैक ---) पुकारते हुए पूरे शांति-प्रशांति के साथ मुज़्दलिफ़ा की तरफ़ रवाना हो जायें, और अपने मुसलमान भाईओं को तक्लीफ़ न पहूँचायें। मुज़्दलिफ़ा पहुँचते ही मग़रिब व इशा की नमाज़ एक साथ क़स्र करके अदा करें, और उसके बाद वहीं रहें यहाँ तक कि फ़ज्र की नमाज़ पढ़ लें, और प्रभात (सुबह) का उजाला अच्छी तरह फैल जाये। फ़ज्र की नमाज़ के बाद नबी करीम ﷺ की पैरवी करते हुए चेहरा क़िब्ला की ओर करके दोनों हाथ उठा कर अधिकाधिक दुआ व ज़िक्र करें।

५ सूर्य उदय (सूरज तुलूअ़) होने से पहले तल्बिया (लब्बैकल्लाहुम्म लब्बैक ---) पुकारते हुए मिना की तरफ़ रवाना हो जायें। उज़्र वाले जैसे महिलायें, बूढ़े और दुर्बल (कमज़ोर) लोग आधी रात के बाद मिना के लिए रवाना हो सकते हैं। जम्रा अ़क़बा की रमी करने के लिए सात कंकरियाँ ले लें और बाक़ी कंकरियाँ मिना ही से चुन लें। ईद के दिन जम्रा अ़क़बा की रमी करने के लिए भी कंकरियाँ मिना से ले सकते हैं।

६ मिना पहुँचने के बाद निम्नलिखित काम करें:

(क) जम्रा अ़क़बा को जो मक्का से नज़्दीक है उसकी रमी करें,

अर्थात परस्पर (एके बाद दीगरे) सात कंकरियाँ मारें। हर कंकरी के साथ अल्लाहु अक्बर कहें।

(ख) अगर आपके ऊपर क़ुर्बानी वाजिब हो तो क़ुर्बानी करें। उसका मांश (गोश्त) स्वयं खायें और अभावियों (ग़रीबों) को खिलायें।

(ग) सिर के बाल मुंडवायें अथवा कतरवायें। मुंडवाना बेहतर है। महिला के लिए उँगली के एक पोर के बराबर काट लेना काफ़ी होगा। यह सब कार्य इसी तर्तीब से करना ज़्यादा बेहतर है, लेकिन अगर आगे-पीछे हो जाए तो कोई हरज नहीं। जम्रा अ़क़बा की रमी और सिर के बाल मुंडवाने या छोटा करवाने के बाद इह्राम का अवरोध (बंदिश) ख़त्म हो गया। अब कपड़े पहन सकते हैं, और बीवी के अलावा इह्राम के कारण निषिद्ध (मम्नूअ़) सारी चीज़ें हलाल हो गईं।

७ अब मक्का जायें और तवाफ़े इफ़ाज़ा करें। अगर हज्जे तमत्तुअ़ की नियत थी तो तवाफ़ के बाद सई भी करें। अगर हज्जे क़िरान की नियत थी और तवाफ़े क़ुदूम (आगमन तवाफ़) के साथ सई की थी तो तवाफ़े इफ़ाज़ा के बाद सई करने की ज़रूरत नहीं। और इसके बाद इह्राम के कारण निषिद्ध (मम्नूअ़) चीज़ों के हलाल होने के साथ बीवी भी हलाल हो जायेगी। तवाफ़े इफ़ाज़ा और सई अय्यामे मिना (११, १२ व १३ ज़ुल्हिज्जा) के बाद भी किया जा सकता है।

८ क़ुर्बानी के दिन तवाफ़े इफ़ाज़ा और सई करने के बाद मिना वापस जायें और अय्यामे तश्रीक़ अर्थात ११, १२ व १३ की रातें वहीं गुज़ारें। अगर कोई १२ तारीख़ ही को जमरात को कंकरियाँ मारने के बाद वापस आ जाये तो भी जायज़ है।

९ इन दोनों या तीनों दिनों में ज़वाल (सूरज ढलने) के बाद तीनों जमरात को कंकरियाँ मारें। शुरूआ़त पहले उस जमूरा से करें, जो मक्का से बाक़ी दोनों की तुलना से (बनिस्बत) अधिक दूर है। फिर दूसरे को और फिर जमूरा अ़क़बा को। प्रत्येक को सात कंकरियाँ मारें और हर कंकरी के साथ अल्लाहु अक्बर कहें। पहले और दूसरे जमूरा को रमी करने के बाद चेहरा क़िबूला की ओर करके हाथ उठाये हुए दुआ़ करें, लेकिन जमूरा अ़क़बा की रमी के बाद दुआ़ के लिए न ठहरें।

अगर मिना में केवल दो ही दिन रहना चाहें तो दूसरे दिन सूर्यास्त (सूरज गुरूब होने) से पहले ही वहाँ से निकल जायें। अगर सूरज मिना में डूब गया तो तीसरे दिन भी अवस्थान करें और कंकरियाँ मारें। बेहतर यही है कि तीसरी रात भी मिना में गुज़ारी जाए। बीमार और कमूज़ोर आदमी के लिए जायज़ है कि कंकरियाँ मारने के लिए किसी को अपना प्रतिनिधि (नाइब) बना दे। और प्रतिनिधि के लिए यह जायज़ है कि पहले अपनी तरफ़ से और फिर नाइब बनाने वाले की तरफ़ से एक ही बार में कंकरियाँ मारे।

१० हज्ज पूरा हो जाने के बाद अपने देश वापस जाना चाहें तो हैज़ और निफ़ास वाली महिला के अलावा सब लोग तवाफ़े विदाअ़ करें। (इस लिए कि उन पर तवाफ़े विदाअ़ ज़रूरी नहीं है।)

मुह्रिम के लिए ज़रूरी बातें

हज्ज और उम्रह का इह्राम बाँधने वालों के लिए निम्नलिखित बातें ज़रूरी हैं:

१ अल्लाह तआ़ला ने जिन आमाल को फ़र्ज़ किया है, उन्हें ज़रूर अदा करें। उदाहरण स्वरूप (मसलन) पाँच वक़्त की नमाज़ जमाअ़त के साथ अदा करें।

२ जिन कामों से अल्लाह तआ़ला ने रोका है उनसे दूर रहें। अर्थात ग़ीबत, अश्लील (बेहूदा) बातें, पाप व बदकारी और लड़ाई-झगड़ा से बचें।

३ अपने वचन व कार्य (क़ौल व अमल) द्वारा मुसलमानों को तक्लीफ़ न पहूँचायें।

४ इह्राम के कराण निषिद्ध (मम्नूअ़) कामों से बचें जिनकी तफ़्सील निम्नरूप है:

(क) बाल न काटें, नाख़ुन न तराशें, अगर ख़ुद से कोई बाल गिर जाता है अथवा कोई नाख़ुन अलग हो जाता है तो कोई बात नहीं।

(ख) अपने शरीर, कपड़े और खाने-पीने की चीज़ों में सुगंध (ख़ुशबू) इस्तेमाल न करें। इह्राम की नियत करने से पूर्व जो सुगंध प्रयोग किया था, अगर उसका कोई असर बाक़ी रह गया है तो कोई हरज नहीं।

(ग) किसी शिकार किये जाने वाले ख़ुश्की के जानवर को न मारें, और न बिदकायें और न ही दूसरों की इस काम में मदद करें।

(घ) महिलाओं को विवाह का पैग़ाम न दें, न अपने अथवा किसी दूसरे के विवाह बंधन (अ़क्दे निकाह) का सबब बनें। और जब तक इह्राम में हो शह्वत के साथ बीवी से मैथुन (मुबाशरत) और संभोग (हम्बिस्तरी) न करें। पूर्वोक्त बातों में नारी-पुरुष समान हैं।

केवल पुरुष के लिए निषिद्ध (मम्नूअ्) बातें

(क) किसी चिपकने वाली चीज़ से अपना सिर न ढाँकें। छत्री अथवा गाड़ी की छत से छाया हासिल करने और सिर पर सामान उठाने में कोई हरज नहीं।

(ख) कुर्ता अथवा कोई दूसरा सिला हुआ ऐसा कपड़ा जो पूरे शरीर या शरीर के अंग को ढाँपता है इस्तेमाल न करें। टोपी, पगड़ी, पाजामा और मोज़े भी इस्तेमाल न करें। अगर किसी को लुंगी मयस्सर (सुलभ) न आए तो पाजामा, और जूते न हूँ तो मोज़े पहन सकता है। महिला के लिए इह्राम के समय दोनों हाथों में दस्ताने (हाथ मोज़ा) पहनना या निक़ाब (मुखावरण) अथवा बुर्क़ा द्वारा अपने चेहरे को छिपाना निषिद्ध (मम्नूअ्) है। अगर अपरिचित (ग़ैर मह्रम) मर्दों का सामना हो रहा है तो फिर चेहरा को ओढ़नी या किसी और चीज़ से छिपाना वैसे ही वाजिब होगा जैसा कि इह्राम की हालत में न रहते हुए वाजिब होता है। अगर मुह्रिम भूल कर या जिहालत (अज्ञात) में सिला हुआ कपड़ा पहन लेता है या अपने सिर को ढाँक लेता है या ख़ुशबू इस्तेमाल कर लेता है या अपना कोई बाल काट लेता है, या अपना नाख़ुन तराश लेता है तो कोई जुर्माना नहीं। लेकिन जैसे ही

याद आये या हुक्म (विधान) जान ले तो उसका दूर करना वाजिब है। चप्पल, अंगूठी, चश्मा, घड़ी, बेल्ट और कोई ऐसा छोटा थैला जिस में पैसा और ज़रूरी काग़ज़पत्र इत्यादि मह्फूज़ (सुरक्षित) रखा जाता है उन सब का पहनना जायज़ है। इसी तरह बहरा के लिए कान का यन्त्र (आला) इस्तेमाल करना भी जायज़ है।

कपड़े बदलना और साफ़ करना, सिर और जिस्म को धोना जायज़ है। अगर इस सूरत में बिना इच्छा के कोई बाल गिर जाता है तो कोई हरज नहीं। इसी प्रकार अगर मुह्रिम को कोई ज़ख़्म पहुँच जाता है तो कोई हरज नहीं।

मस्जिदे नबवी की ज़ियारत

१ मस्जिदे नबवी की ज़ियारत और उसमें नमाज़ पढ़ने की नियत से मदीना मुनव्वरा का यात्रा मस्नून (सुन्नत सम्मत) है। क्योंकि उस में एक नमाज़ पढ़ना मस्जिदे हराम के अलावा तमाम दूसरी मस्जिदों की हज़ार नमाज़ों से श्रेष्ठ व बेहतर है।

२ मस्जिदे नबवी की ज़ियारत के लिए इह्राम और तल्बिया की ज़रूरत नहीं, और न ही हज्ज और इसके दर्मियान कोई लाज़िमी तअ़ल्लुक़ है। (अर्थात मस्जिदे नबवी का हज्ज से कोई संपर्क नहीं।)

३ मस्जिदे नबवी में प्रवेश के समय पहले दायाँ पाँव बढ़ायें और बिस्मिल्लाह कहें और दुरूद पढ़ें और अल्लाह से दुआ़ करें कि आपके लिए अपनी रह्मत के दरवाज़े खोल दे और यह दुआ़ पढ़ें:

«أَعُوذُ بِاللهِ الْعَظِيمِ وَوَجْهِهِ الْكَرِيمِ وَسُلْطَانِهِ الْقَدِيمِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ، اللَّهُمَّ افْتَحْ لِي أَبْوَابَ رَحْمَتِكَ».

उच्चारणः "अऊ़ज़ु बिल्लाहिल् अ़ज़ीम व वज्हिहिल् करीम व सुल्तानिहिल् क़दीम मिनश्शैतानिर्रजीम, अल्लाहुम्मफ़्तह् ली अब्वाब रह्मतिक।"

अर्थः "अल्लाह अ़ज़्मत वाले की पनाह चाहता हूँ और उसके बाइ़ज़्ज़त चेहरा और उसके क़दीम सलतनत की पनाह चाहता हूँ मर्दूद शैतान से। हे अल्लाह! मेरे लिए अपनी रह्मत के दरवाज़े खोल दे।"

दूसरी मस्जिदों में प्रवेश के समय भी यही दुआ़ पढ़नी चाहिए।

४ मस्जिद में दाख़िल होते ही सबसे पहले तहिय्यतुल मस्जिद (मस्जिद की सलामी नमाज़) पढ़ें। अगर रौज़तुल जन्नत (मस्जिदे नबवी के उस हिस्से में जिसे जन्नत का बाग़ कहा गया है) में जगह मिल जाये तो बेहतर है, वर्ना फिर मस्जिद में किसी जगह नमाज़ पढ़ लें।

५ इसके बाद नबी करीम ﷺ की क़ब्र की तरफ़ जायें और चेहरा क़ब्र की ओर करके खड़े होकर अदब के साथ धीमी आवाज़ से कहें:

«السَّلَامُ عَلَيْكَ أَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللهِ وَبَرَكَاتُهُ».

उच्चारण: "अस्सलामु अ़लैक अय्युहन्नबिय्यु व रह़मतुल्लाहि व बरकातुहु।"

अर्थ: "आप पर सलामती हो ऐ नबी, और अल्लाह की रह़मत व बर्कत नाज़िल हूँ आप पर।"

और दुरूद पढ़ें। यह दुआ़ भी पढ़ी जा सकती है:

«اللَّهُمَّ آتِهِ الْوَسِيلَةَ وَالْفَضِيلَةَ وَابْعَثْهُ الْمَقَامَ الْمَحْمُوْدَ الَّذِي وَعَدْتَهُ، اللَّهُمَّ أَجْزِهِ عَنْ أُمَّتِهِ أَفْضَلَ الْجَزَاءِ».

उच्चारण: "अल्लाहुम्म आतिहिल् वसीलत वल्फ़ज़ीलत वबअ़स्हुल् मक़ामल् मह़्मूदल्लज़ी वअ़त्तहु, अल्लाहुम्म अज्ज़िहि अ़न उम्मतिहि अफ्ज़लल् जज़ा।"

अर्थ: "हे अल्लाह! तू उनको (मुहम्मद ﷺ को) वसीलह (जन्नत में बुलंद तरीन दर्जा का नाम है) और फ़ज़ीलत अता फ़रमा, और उनको उस मक़ामे मह़्मूद (मक़ामे शफ़ाअ़त) से नवाज़ जिसका तू ने वादा किया है। हे अल्लाह! तू उनको उनकी उम्मत की तरफ़ से बेहतरीन सिला अता फ़रमा।"

फिर थोड़ा दायें तरफ़ बढ़ कर अबू बक्र رضي الله عنه की क़ब्र के सामने

खड़े हो जायें, सलाम करें और उनके लिए मग़्फ़िरत व रह्मत और रिज़ा की दुआ़ करें। इसके बाद कुछ दायें तरफ़ बढ़ कर उमर ﷺ की क़ब्र के सामने खड़े हो जायें, सलाम करें और उनके लिए भी मग़्फ़िरत व रह्मत और रिज़ा की दुआ़ करें।

६ वज़ू करके मस्जिदे क़ुबा जाना और उस में नमाज़ पढ़ना सुन्नत है। नबी करीम ﷺ ने ख़ुद ऐसा किया और दूसरों को इसकी तर्ग़ीब दिलाई।

७ क़ब्रिस्तान बक़ीअ़ की ज़ियारत करना मस्नून है। उसमें उस्मान رضي الله عنه की क़ब्र है। उहुद के शहीदों (जिन में हम्ज़ा رضي الله عنه की क़ब्र भी है) की ज़ियारत भी मस्नून है। उन सबको सलाम करें और उनके लिए दुआ़ करें। इस लिए कि नबी करीम ﷺ उनकी ज़ियारत करते और उनके लिए दुआ़ फ़रमाते थे। और सहाबा किराम رضي الله عنهم को सिखलाते थे कि जब क़ब्रों की ज़ियारत करो तो कहो:

«السَّلَامُ عَلَيْكُمْ أَهْلَ الدِّيَارِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُسْلِمِيْنَ، وَإِنَّا إِنْ شَاءَ اللهُ بِكُمْ لَاحِقُوْنَ، نَسْأَلُ اللهَ لَنَا وَلَكُمُ الْعَافِيَةَ» [مسلم]

उच्चारण: ‘‘अस्सलामु अ़लैकुम अह्लद्दियारि मिनल् मोमिनीन वल्मुस्लिमीन, व इन्ना इनशअल्लाहु बिकुम लाहिक़ून, नस्अलुल्लाह लना व लकुमुल् आ़फ़िया।’’ (मुस्लिम)

अर्थ: ‘‘ऐ मोमिन व मुस्लिम घर वालो! तुम पर सलाम हो, और हम इन्शाअल्लाह (अगर अल्लाह ने चाहा) तुम से मिलने वाले हैं। हम अपने लिए और तुम्हारे लिए अल्लाह तआ़ला से आ़फ़ियत माँगते है।’’ (मुस्लिम)

मदीना मुनव्वरा में कोई दूसरी जगह या मस्जिद नहीं जिसकी ज़ियारत जायज़ हो। इस लिए अपने आपको तक्लीफ़ में न डालें और न ही कोई ऐसा काम करें जिसका कोई अज्र न मिले बल्कि उल्टा गुनाह का आशंका है।

ग़लतियाँ जिनका इर्तिकाब बाज़ हाजी करते हैं

इह्राम की ग़लतियाँः

इह्राम बाँधे बिना मीक़ात से आगे गुज़र जाना यहाँ तक कि जिद्दा या मीक़ात सीमा के अंदर किसी और जगह पहुँच कर वहाँ से इह्राम बाँधना। यह नबी करीम ﷺ के उस हुक्म के ख़िलाफ़ है जिस में कहा गया है कि हर हाजी को मीक़ात से इह्राम बाँध लेना चाहिए। जो व्यक्ति मीक़ात सीमा पार कर जाए उसे वापस जा कर या तो मीक़ात से इह्राम बाँधना चाहिए या एक फ़िद्या दे (एक बकरी ज़बह करे) जिसे मक्का मुकर्रमा में ज़बह करके पूरा का पूरा वहाँ के फ़क़ीरों को खिला दे। चाहे वह हवाई जहाज़ से आया हो या ज़मीनी रास्ते से या समुद्र के रास्ते से। अगर मीक़ात की पाँच प्रसिद्ध जगहों में से किसी भी जगह से गुज़र न हो तो जिस मीक़ात का सामना पहले हो वहाँ से इह्राम बाँध ले।

तवाफ़ की ग़लतियाँः

१ हजरे अस्वद से पहले ही तवाफ़ शुरू कर देना, हालाँकि हजरे अस्वद के पास से शुरू करना वाजिब है।

२ कअ़बा की असम्पूर्ण (ग़ैर मुकम्मल) दीवार के अंदर से तवाफ़ करना। जिसने ऐसा किया उसने पूरे कअ़बा का तवाफ़ नहीं किया। इस लिए कि हिज्र (हत़ीम यानी कअ़बा का वह भाग जो क़ुरैश ने बनाते

समय छोड़ दिया था) कअ़्बा का एक अंश है। इस तरह उसका हर वह चक्कर बातिल हो जाएगा जो कअ़्बा की दीवार के अंदर से किया हो।

३ तवाफ़ के सातों चक्करों में तेज़ चलना, जबकि ऐसा करना तवाफ़े कुदूम (आगमन तवाफ़) के केवल शुरू के तीन चक्करों के साथ ख़ास है।

४ हजरे अस्वद को चुंबन (बोसा) देने के लिए प्रचंडता (शिद्दत) के साथ भीड़ करना। कभी कभी मार-पीट और गाली-गुलूज की नौबत आ जाती है। ऐसा करना हरगिज़ दुरुस्त नहीं। तवाफ़ के शुद्ध होने के लिए हजरे अस्वद को चुंबन देना हरगिज़ ज़रूरी नहीं। बल्कि दूर से केवल उसकी तरफ़ इशारा करना और अल्लाहु अक्बर कहना काफ़ी होगा।

५ हजरे अस्वद को बरकत की नियत से स्पर्श करना (छूना) बिद्अत है। शरीअ़त में इसकी कोई दलील नहीं। सुन्नत केवल उसका स्पर्श करना और बोसा देना है अल्लाह की इबादत समझ कर।

६ कअ़्बा के समस्त कोणों (सारे गोशों) का स्पर्श करना और कभी कभी उसकी समस्त दीवारों का छूना। नबी करीम ﷺ ने हजरे अस्वद और रुक्ने यमानी को छोड़ कर कअ़्बा के किसी भी अंश को स्पर्श नहीं किया।

७ तवाफ़ के हर चक्कर के लिए अलग अलग दुआ़ मख़्सूस करना। यह भी रसूलुल्लाह ﷺ से प्रमाणित नहीं। केवल इतना प्रमाणित है कि जब आप हजरे अस्वद के पास आते तो तक्बीर (अल्लाहु अक्बर) कहते और हजरे अस्वद व रुक्ने यमानी के बीच हर चक्कर के अख़ीर में यह दुआ़ पढ़तेः

﴿رَبَّنَآ ءَاتِنَا فِي ٱلدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي ٱلْأَخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ ٱلنَّارِ﴾

[سورة البقرة: ٢٠١]

"ऐ हमारे पालनहार! हमें इस संसार में भलाई प्रदान कर और परलोक (आख़िरत) में भी भलाई प्रदान कर और हमें नरक (जहन्नम) की यातना (अज़ाब) से बचा ले।"

٨ कुछ तवाफ़ करने वाले और तवाफ़ कराने वाले तवाफ़ की हालत में अपनी आवाज़ें इतनी ऊँची करते हैं कि दूसरे तवाफ़ करने वालों को तश्वीश (डिस्टर्ब) होती है। यह भी तवाफ़ की ग़लतियों में से है।

٤ मक़ामे इब्राहीम के पास नमाज़ पढ़ने के लिए भीड़ करना भी सुन्नत विपरीत (ख़िलाफ़े सुन्नत) है। और इससे तवाफ़ करने वालों को तक्लीफ़ पहुँचती है। तवाफ़ की दो रक्अ़त नमाज़ मस्जिद में कहीं भी पढ़ सकते हैं।

सई की ग़लतियाँः

١ कुछ लोग सफ़ा और मर्वा पर पहुँच कर कअ़बा की तरफ़ चेहरा करके तक्बीर कहते समय अपने हाथों से उसकी तरफ़ इशारा करते हैं जैसे नमाज़ के लिए तक्बीर कह रहे हूँ। इस तरह इशारा करना सहीह नहीं। सुन्नत यह है कि अपने हाथ इस तरह उठाए जैसे दुआ़ के लिए उठाते हैं।

٢ कुछ लोग सई के दर्मियान पूरा समय दौड़ते रहते हैं, हालाँकि सुन्नत यह है कि दोनों हरे निशानों के दर्मियान दौड़े और बाक़ी चलता रहे।

अ़रफ़ात की ग़लतियाँः

१ कुछ हाजी अ़रफ़ात सीमा के बाहर ही पड़ाव डाल देते हैं और सूर्यास्त (सूरज डूबने) तक वहीं रहते हैं एवं अ़रफ़ात में अवस्थान (वक़ूफ़) के बिना ही मुज़्दलिफ़ा आ जाते हैं। यह बहुत बड़ी ग़लती है, इससे हज्ज फ़ौत हो जाता है, क्योंकि हज्ज अ़रफ़ात में अवस्थान का नाम है। हाजी के लिए ज़रूरी है कि अ़रफ़ात सीमा के अंदर रहे। अगर भीड़ के कारण अथवा किसी और कारण ऐसा संभव न हो तो सूरज डूबने से पहले दाख़िल हो और सूरज डूबने तक ठहरा रहे। अ़रफ़ात में क़ुर्बानी की रात में दाख़िल होना भी काफ़ी होगा।

२ कुछ लोग सूरज डूबने से पहले ही अ़रफ़ात से लौट जाते हैं। ऐसा करना सहीह नहीं, क्योंकि रसूलुल्लाह ﷺ अ़रफ़ात में उस वक़्त तक ठहरे रहे जब तक सूरज पूरे तौर पर डूब न गया।

३ कुछ लोग रह़मत नामक पहाड़ (जबले रह़मत) की चोटी तक पहुंचने के लिए भीड़ और दूसरों को तक्लीफ़ पहूँचाने का कारण बनते हैं। पूरे मैदाने अ़रफ़ात में किसी जगह भी अवस्थान सहीह है और पहाड़ पर चढ़ना दुरुस्त नहीं और न ही वहाँ नमाज़ पढ़ना सहीह है।

४ कुछ लोग दुआ़ करते समय रह़मत नामक पहाड़ की ओर रुख़ करते हैं, हालाँकि सुन्नत क़िबला की ओर रुख़ करना है।

५ कुछ लोग अ़रफ़ा के दिन निर्दिष्ट स्थानों में मिट्टी और कंकरों का ढेर लगाते हैं। ऐसा करना शरीअ़त के ख़िलाफ़ है।

मुज़्दलिफ़ा की ग़लतियाँः

कुछ लोग ऐसा करते हैं कि मुज़्दलिफ़ा पहुँचते ही मग़्रिब और इशा की

नमाज़ पढ़ने से पहले कंकर चुनना शुरू कर देते हैं और यह समझते हैं कि कंकर मुज़्दलिफ़ा से ही होना चाहिए। हालाँकि सही मस्अला यह है कि कंकर समूह हरम सीमा में कहीं से भी लिए जा सकते हैं। बल्कि साबित यह है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने अपने लिए जम्रा अक़बा के कंकर समूह मुज़्दलिफ़ा से चुनने का हुक्म नहीं दिया था बल्कि सुबह को मुज़्दलिफ़ा से वापसी के बाद मिना से चुने गए थे। इसी प्रकार अवशिष्ट (बाक़ी) दिनों के कंकर समूह भी मिना से लिए गये थे। कुछ लोग कंकरों को पानी से धोते हैं। यह अमल भी शरीअ़त मुताबिक़ (मशरूअ़) नहीं है।

रमी (कंकर मारने) की ग़लतियाँ:

१ कुछ लोग कंकर मारते समय यह अ़क़ीदा रखते हैं कि वह शैतान को मार रहे हैं। इसी लिए जमरात में कंकर मारते हुए आक्रोश प्रकट (गुस्सा का इज़्हार) करते हैं और गालियाँ भी देते हैं। हालाँकि कंकर मारने की हिक्मत अल्लाह तआ़ला का स्मरण (याद) है।

२ कंकर मारने के लिए बड़े पत्थर, जूते या लकड़ी का इस्तेमाल करना दीन में ग़ुलू और ज़ियादती है। जबकि रसूलुल्लाह ﷺ ने ग़ुलू करने से मना फ़रमाया है। और इस तरह करने से रमी भी नहीं होगी। शरीअ़त सम्मत (मश्रूअ़) बात यह है कि छोटे छोटे कंकर इस्तेमाल किये जायें जो बकरी की मींगनी जैसे हों।

३ कंकर मारते समय धक्कम-धक्का और मार-धाड़ करना शरीअ़त के ख़िलाफ़ बात है। कोशिश यह होनी चाहिए कि किसी को तक्लीफ़ पहूँचाये बिना कंकर मारें।

४ समस्त कंकरों को एक मुट्ठी में लेकर एक ही बार में मार देना सहीह नहीं है। विद्वानों (उलमा) का फ़त्वा है कि ऐसी सूरत में केवल एक कंकर शुमार होगा। इस लिए कि शरीअ़त का हुक्म यह है कि कंकर समूह एक एक करके मारे जायें और हर कंकर के साथ तक्बीर कही जाये।

५ मशक़्क़त और भीड़ से डरते हुए क्षमता (क़ुदरत व ताक़त) के बावजूद कंकर मारने के लिए दूसरे को प्रतिनिधि (नाइब) बनाना सहीह नहीं। अत्यधिक (निहायत) बीमारी या किसी और मज्बूरी के कारण केवल क्षमता न रखने की स्थिति में नाइब बनाना जायज़ है।

तवाफ़े विदाअ़ की ग़लतियाँः

१ कुछ लोग बारहवीं या तेरहवीं तारीख़ को कंकर मारने से पहले मिना से मक्का आते हैं, तवाफ़े विदाअ़ करते हैं, फिर मिना जाकर कंकर मारते हैं और वहीं से अपने शहर या देश की तरफ़ वापस हो जाते हैं। ऐसी सूरत में अंतिम काम कंकर मारना होता है, न कि कअ़बा का तवाफ़। जबकि रसूलुल्लाह ﷺ का फ़र्मान हैः "मक्का मुकर्रमा से रवानगी से पहले आख़िरी काम अल्लाह के घर का तवाफ़ होना चाहिए।" इस लिए ज़रूरी है कि तवाफ़े विदाअ़ हज्ज के कामों से निवृत्त (फ़ारिग़) होने के बाद और यात्रा से कुछ पहले होना चाहिए। इसके बाद मक्का में देर तक नहीं ठहरना चाहिए।

२ कुछ लोग तवाफ़े विदाअ़ के बाद मस्जिदे हराम से उल्टे पाँव निकलते हैं और चेहरा कअ़बा की तरफ़ होता है। वह समझते हैं कि इसमें कअ़बा का सम्मान है। हालाँकि यह सरासर बिद्अ़त है, दीन में इसकी कोई हक़ीक़त नहीं।

३ कुछ लोग तवाफ़े विदाअ् के बाद मस्जिदे हराम के दरवाज़े पर पहुँच कर कअ्बा कि तरफ़ चेहरा करके अत्यधिक (बकस्रत) दुआ़ करते हैं जैसे कि ख़ाना कअ्बा को रुख़्सत (विदाअ्) कर रहे हूँ। यह भी बिदअ़त है, इसकी कोई शरई हैसियत नहीं।

मस्जिदे नबवी की ज़ियारत की ग़लतियाँः

१ कुछ लोग रसूलुल्लाह ﷺ के क़ब्र की ज़ियारत के समय दीवारों और लोहे की छड़ों (सलाखों) पर हाथ फेरते हैं, खिड़कियों में बर्कत हासिल करने की नियत से धागे इत्यादि बाँधते हैं। हालाँकि बर्कत उन कामों से हासिल होती है जिन्हें अल्लाह और उसके रसूल ﷺ ने मशरूअ् (शरीअ़त सम्मत) क़रार दिया हो। खुराफ़ात और बिद्अ़तों से बर्कत हासिल नहीं हो सकती।

२ उहुद पहाड़ के ग़ार (गुफा), ग़ारे सौर और ग़ारे हिरा की ज़ियारत के लिए जाना, वहाँ धागे इत्यादि बाँधना और ग़ैर मश्रूअ् दुआ़यें करना और उन सब कामों के लिए तक्लीफ़ें उठाना। उक्त सारे काम बिद्अ़त के हैं, शरीअ़त में उनकी कोई असलियत (बुनियाद) नहीं।

३ कुछ स्थानों के बारे में यह धारणा रखा जाता है कि उनका संपर्क (तअ़ल्लुक़) रसूलुल्लाह ﷺ से रहा है, जैसे ऊँटनी के बैठने का स्थान, अगूंठी वाला कुँआ, उस्मान رضي الله عنه का कुँआ। इन स्थानों की ज़ियारत करना और बर्कत के लिए मिट्टी लेना बिद्अ़त है, इसकी कोई दलील मौजूद नहीं।

४ बक़ीअ् और उहुद के शहीदों के क़ब्रों की ज़ियारत के वक़्त मुर्दों को पुकारना, क़ब्रों से निकटता (तक़र्रुब) और क़ब्र वालों की

बर्कत हासिल करने के लिए पैसे डालना। यह सब बड़ी ख़तरनाक ग़लतियाँ हैं, बल्कि शिर्क अक्बर (बड़ा शिर्क) है, जैसा कि उलमा ने लिखा है और अल्लाह की किताब और रसूलुल्लाह ﷺ की सुन्नत में इसके स्पष्ट प्रमाण (वाज़ेह दलाएल) मौजूद हैं। इस लिए कि इबादत (उपासना) सिर्फ़ अल्लाह के लिए ख़ास है। इबादत की कोई भी क़िस्म ग़ैरुल्लाह के लिए जायज़ नहीं। जैसे दुआ, क़ुर्बानी, नज़्र व नियाज़ इत्यादि। अल्लाह तआ़ला का फ़र्मान है:

﴿وَمَآ أُمِرُوٓاْ إِلَّا لِيَعۡبُدُواْ ٱللَّهَ﴾ [سورة البينة: ٥]

“उनको इस बात का हुक्म दिया गया है कि सिर्फ़ अल्लाह की इबादत करें।” (सूरह अल्-बय्यिनाः ५)

और अल्लाह तआ़ला का इर्शाद है:

﴿وَأَنَّ ٱلۡمَسَٰجِدَ لِلَّهِ فَلَا تَدۡعُواْ مَعَ ٱللَّهِ أَحَدٗا﴾ [سورة الجن: ١٨]

“मस्जिदें सिर्फ़ अल्लाह के लिए हैं, इस लिए अल्लाह के साथ किसी और को न पुकारो।” (सूरह अल्-जिन्नः १८)

हम अल्लाह तआ़ला से दुआ़ करते हैं कि मुसलमानों के हालात सुधार दे, उनको दीन की समझ प्रदान करे, और हम सबको फ़ितना-फ़साद से दूर रखे, वही सुनने वाला और क़बूल करने वाला है।

हज्ज, उम्रह व मस्जिदे नबवी की ज़ियारत संबंधी मुख़्तसर गाइड

१ सबसे पहले समस्त गुनाहों से ख़ालिस दिल के साथ तौबा करें और हज्ज व उम्रह के लिए हलाल माल का इन्तिख़ाब (चयन) करें।

२ झूट, ग़ीबत, चुगलख़ोरी और दूसरों का मज़ाक़ उड़ाने से अपनी ज़बान की रक्षा (हिफ़ाज़त) करें।

३ हज्ज व उम्रह से नियत अल्लाह की संतुष्टि (रिज़ा) और आख़िरत की तैयारी हो।

४ क़ौली व फ़ेली (कथन व कर्म संबंधी) हज्ज व उम्रह के मनासिक का इल्म हासिल करें और जटिल समस्या (मुश्किल मसायेल) विद्वानों से पूछें।

५ हाजी जब मीक़ात पर पहुँचे तो उसे अधिकार है कि इफ़्राद, क़िरान और तमत्तुअ़ तीनों में से किसी एक की नियत करें। लेकिन अगर कोई व्यक्ति क़ुर्बानी का जानवर नहीं लाता है तो उसके लिए अफ़्ज़ल हज्ज हज्जे तमत्तुअ़ है, और जो जानवर लाता है उसके लिए अफ़्ज़ल हज्ज हज्जे क़िरान है।

६ अगर किसी बीमारी या डर की वजह से मुह्रिम को आशंका हो कि वह अपना हज्ज मुकम्मल (पूरा) नहीं कर सकेगा तो बेहतर यह है कि नियत करते समय इन शब्दों (अल्फ़ाज़) को भी बढ़ा लेः

«إِنَّ مَحِلِّي حَيْثُ حَبَسْتَنِي».

उच्चारणः "इन्न महिल्ली हैसु हबस्तनी।"

अर्थः "हे अल्लाह! तू मुझे जहाँ रोक दे वहीं हलाल हो जाऊँगा।"

७ छोटे बच्चे और छोटी बच्ची का हज्ज सहीह होगा लेकिन युवावस्था (बुलूग़त) के बाद फ़र्ज़ हज्ज की तरफ़ से काफ़ी नहीं होगा।

८ मुह्रिम नहा सकता है, अपना सिर धो सकता है और खुजला सकता है।

९ महिला अपने चेहरे पर दोपट्टा डाल सकती है, अगर यह डर हो कि ग़ैर मह्रम लोग उसकी तरफ़ देख रहे हैं।

१० अनेक महिलायें दोपट्टा के नीचे कोई सख़्त चीज़ इस्तेमाल करती हैं ताकि उसे चेहरे से दूर रखा जाये। शरीअ़त में इसकी कोई वास्तविकता (हक़ीक़त) नहीं है।

११ मुह्रिम अपने इह्राम के कपड़े धो सकता है, उनके बदले दूसरे पहन सकता है।

१२ अगर मुह्रिम आदमी ने भूल कर या अज्ञता (नादानी) में सिला हुआ कपड़ा पहन लिया, या सिर ढाँक लिया, या ख़ुशबू लगा ली तो उस पर कोई फ़िद्या व जुर्माना नहीं।

१३ हाजी ख़ाना कअ़बा के पास पहुँचते ही तवाफ़ शुरू करने से पहले (अगर हज्जे तमत्तुअ़ या केवल उम्रह की नियत है) तल्बिया बंद कर देगा।

१४ तवाफ़ के पहले तीन चक्करों में तेज़ चलना और दायें बग़ल के

नीचे से चादर निकाल कर कंधा खुला रखना, केवल तवाफ़े कुदूम में और सिर्फ़ मर्दों के लिए जायज़ है।

१५ अगर हाजी को संदेह हो जाये कि उसने -उदाहरण स्वरूप (मसलन)- तवाफ़ या सई के तीन चक्कर लगाये हैं या चार चक्कर तो सिर्फ़ तीन शुमार करे।

१६ यदि भीड़ ज़्यादा बढ़ जाये तो ज़म्ज़म् और मक़ामे इब्राहीम के पीछे से तवाफ़ करने में कोई हरज नहीं। बल्कि पूरी मस्जिद तवाफ़ की जगह है, पहली मंज़िल, दूसरी मंज़िल और तीसरी मंज़िल सब समान हैं।

१७ महिला के लिए यह गुनाह की बात है कि तवाफ़ की हालत में शृंगार व सजावट (ज़ीनत व ज़िबाइश), ख़ुशबू और बेपर्दगी की हालत में हो।

१८ अगर इह्राम की नियत के बाद महिला को मासिक (हैज़) आरंभ हो जाता है या वलादत हो जाती है तो पवित्रता (तहारत) से पहले उसके लिए अल्लाह के घर का तवाफ़ करना सहीह न होगा।

१९ महिला किसी भी कपड़े में इह्राम की नियत कर सकती है, शर्त केवल यह है कि मर्दों के सदृश (मुशाबिह) न हो और बेपर्दगी व ज़ीनत के लिए ग़ैर शरई लिबास न पहने।

२० हज्ज और उम्रह के अलावा किसी भी दूसरी इबादत में नियत को शब्दों में अदा करना बिद्अ़त है और ऊँची आवाज़ में अदा करना तो और भी बुरा है।

२१ वयस्क (बालिग़) मुसलमान के लिए हराम है कि बिना इह्राम के मीक़ात से आगे बढ़े (अगर उसने हज्ज या उम्रह की नियत की है)।

२२ जो हाजी या उम्रह करने वाले हवाई जहाज़ से आते हैं वह मीक़ात के सामने से गुज़रते समय इह्राम बाँधेंगे। लेकिन मीक़ात की बराबरी से पहले सारी तैयारी कर लेंगे। जहाज़ में सो जाने या भूल जाने के डर से मीक़ात से पहले ही इह्राम बाँध लें तो भी कोई हरज नहीं।

२३ कुछ लोग हज्ज के बाद तनूईम या जेइर्राना से अधिकाधिक (बकसूरत) उम्रह करते हैं। हालाँकि उसके जायज़ होने का कोई शरूई प्रमाण मौजूद नहीं।

२४ हाजी साहेबान आठ तारीख़ को मक्का मुकर्रमा में अपने अवस्थान स्थल (क़ियाम गाह) से ही हज्ज का इह्राम बाँध लेंगे। मीज़ाब (परूनाला) के पास से इह्राम ज़रूरी नहीं, जैसा कि बहुत से लोग करते हैं।

२५ नौ तारीख़ को मिना से अ़रफ़ात के लिए रवानगी सूरज तुलूअ् होने के बाद बेहतर है।

२६ सूरज डूबने से पहले अ़रफ़ा से वापसी जायज़ नहीं। सूरज डूबने के बाद वापसी के लिए रवानगी पूरे सुकून व इत्मीनान के साथ होनी चाहिए।

२७ मुज़्दलिफ़ा पहुँचने के बाद मग़्रिब व इशा की नमाज़ें पढ़ी जायेंगी, चाहे मग़्रिब का वक़्त बाक़ी हो या इशा का वक़्त शुरू हो चुका हो।

२८ कंकर समूह कहीं से भी लिए जा सकते हैं, मुज़्दलिफ़ा से लेना ज़रूरी नहीं।

२९ कंकरों को धोना मुस्तहब नहीं। इस लिए कि इसका सुबूत रसूले अक्रम ﷺ या सहाबा किराम से नहीं मिलता।

३० कम्ज़ोर औरतें और बच्चे (और जो उनके हुक्म में हूँ) रात के आख़िरी पहर में मुज़्दलिफ़ा से मिना के लिए रवाना हो सकते हैं।

३१ हाजी जब ईद के दिन मिना पहुँचे तो जम्रा अक़्बा की रमी के साथ लब्बैक कहना बंद कर दे।

३२ यह ज़रूरी नहीं कि कंकर फेंकी गई जगह में बाक़ी रहे, बल्कि केवल शर्त यह है कि उसके हुदूद (सीमा) में गिरे।

३३ विद्वानों के सहीह मतानुसार (क़ौल के मुताबिक़) क़ुर्बानी का समय अय्यामे तश्रीक़ (ज़ुल्हिज्जा महिना के ११, १२ व १३वीं दिन अय्यामे तश्रीक़ कहलाते हैं) के तीसरे दिन सूर्यास्त (सूरज ग़ुरूब होने) तक है।

३४ तवाफ़े इफ़ाज़ा हज्ज का रुक्न है जिसके बिना हज्ज पूरा नहीं होता, लेकिन अय्यामे मिना (मिना के दिनों) तक उसकी ताख़ीर (विलंब करना) जायज़ है।

३५ हज्जे इफ़्राद और हज्जे क़िरान करने वाले पर केवल एक सई वाजिब है।

३६ हाजी के लिए बेहतर है कि वह क़ुर्बानी के दिन के कामों में अनुक्रम (तर्तीब) का ख़्याल रखे। पहले जम्रा अक़्बा की रमी करे,

फिर सिर के बाल मुंडवाये या कटवाये, फिर अल्लाह के घर का तवाफ़ करे और इसके बाद सई करे। अगर इन कामों में तक़्दीम व ताख़ीर (आगे-पीछे) हो जाये तो कोई हरज नहीं।

३७ वह काम जिनको कर लेने के बाद हाजी पूरे तौर पर हलाल हो जाता है: (१) जमूरा अक़बा की रमी, (२) सिर के बाल मुंडवाना या कटवाना, (३) तवाफ़े ज़ियारत (इफ़ाज़ा) और सई।

३८ अगर हाजी मिना से जल्दी वापस आना चाहता है तो बारह तारीख़ को सूर्यास्त (सूरज गुरूब होने) से पहले ही मिना से निकल जाये।

३९ जो बच्चा रमी न कर सकता हो उसके बदले उसका अभिभावक अर्थात वली (अपनी रमी कर लेने के बाद) करेगा।

४० अगर कोई आदमी बीमार या बुढ़ापे या किसी और सबब से रमी करने से असमर्थ (आ़जिज़) हो तो किसी को प्रतिनिधि (नाइब) बना दे।

४१ प्रतिनिधि (वकील या नाइब) के लिए यह जायज़ है कि एक ही वक़्त में पहले अपनी रमी करे फिर उसकी जिसका वह प्रतिनिधि है।

४२ अगर हाजी क़िरान या तमत्तुअ़ करने वाला है और मक्का मुकर्रमा का निवासी (बाशिंदा) नहीं है तो उस पर क़ुर्बानी वाजिब है। (एक बकरी, अथवा गाय या ऊँट का सातवाँ हिस्सा)।

४३ अगर क़िरान या तमत्तुअ़ करने वाले के पास क़ुर्बानी के पैसे न हूँ तो तीन दिन हज्ज के दिनों में रोज़े रखे और सात रोज़े घर पहुँच जाने के बाद।

४४ बेहतर यह है कि तीनों रोज़े अ़रफ़ा के दिन से पहले ही रख लिये जायें, ताकि अ़रफ़ा के दिन रोज़े की हालत में न रहे। अगर पहले न रख सका तो अय्यामे तश्रीक़ में रख ले।

४५ उपर्युक्त (मज़्कूरा) तीनों रोज़े लगातार और अलग अलग भी रखे जा सकते हैं मगर अय्यामे तश्रीक़ गुज़र जाने तक उन्हें विलंबित (मुअख़्ख़र) नहीं करना चाहिए। इसी तरह बाक़ी सात रोज़े भी लगातार और अलग अलग रखना दुरुस्त है।

४६ हैज़ और निफ़ास वाली ओ़रत के अलावा तवाफ़े विदाअ़ हर हाजी पर वाजिब है।

४७ मस्जिदे नबवी की ज़ियारत मस्नून है चाहे हज्ज से पहले करे या उसके बाद, या साल के किसी भी दिन।

४८ मस्जिदे नबवी की ज़ियारत करने वाला पहले मस्जिद में किसी भी जगह दो रकूअ़त तहिय्यतुल मस्जिद (मस्जिद की सलामी नमाज़) अदा करे। और बेहतर है कि यह दोनों रकूअ़तें रौज़ा शरीफ़ में अदा करे।

४९ रसूल ﷺ की क़ब्र की ज़ियारत और दूसरी क़ब्रों की ज़ियारत केवल मर्दों के लिए जायज़ है, ओ़रतों के लिए नहीं, लेकिन इस शर्त के साथ कि सफर क़ब्र की ज़ियारत की नियत से न हो।

५० हुजूरा शरीफ़ को छूना, उसको बोसा देना, या उसका तवाफ़ करना बहुत बुरी बिद्अ़त है जिसका सुबूत अस्लाफ़े किराम से नहीं मिलता। और अगर तवाफ़ का मक़्सद रसूलुल्लाह ﷺ की कुर्बत (निकटता) हासिल करनी हो तो बड़ा शिर्क है।

٥١ रसूले अक्रम ﷺ से किसी बात का सवाल करना (कुछ माँगना) शिर्क है।

٥٢ रसूले अक्रम ﷺ की ज़िंदगी (जीवन) क़ब्र में बर्ज़ख़ी ज़िंदगी है, मौत से पहले जैसे ज़िंदगी नहीं। उसकी हक़ीक़त व कैफ़ियत का इल्म सिर्फ़ अल्लाह ही को है।

٥٣ कुछ ज़ियारत करने वाले रसूलुल्लाह ﷺ की क़ब्र की तरफ़ रुख़ करके दोनों हाथों को उठा कर दुआ़ करते हैं, ऐसा करना सरासर बिद्अ़त है।

٥٤ रसूल ﷺ की क़ब्र की ज़ियारत न वाजिब है और न ही हज्ज की तक्मील के लिए शर्त है जैसा कि कुछ लोग समझते हैं।

٥٥ जिन हदीसों से कुछ लोग केवल रसूल ﷺ की क़ब्र की ज़ियारत के लिए सफर करने की मश्रूइयत पर (शरीअ़त सम्मत होने पर) दलील लेते हैं, या तो वह ज़ईफ़ हैं या मौज़ूअ़ (मनघड़ंत) हैं।

दुआएं

निम्नलिखित दुआ समूह अथवा उनमें से जो संभव हो, अरफ़ात व मुज़्दलिफ़ा एवं दुआ के अन्य (दीगर) स्थानों में पढ़नी चाहिए

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِي دِينِي وَدُنْيَايَ وَأَهْلِي وَمَالِي. اللَّهُمَّ اسْتُرْ عَوْرَاتِي، وَآمِنْ رَوْعَاتِي، اللَّهُمَّ احْفَظْنِي مِنْ بَيْنِ يَدَيَّ وَمِنْ خَلْفِي، وَعَنْ يَمِينِي وَعَنْ شِمَالِي وَمِنْ فَوْقِي، وَأَعُوذُ بِعَظَمَتِكَ أَنْ أُغْتَالَ مِنْ تَحْتِي.

उच्चारणः अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुकल् अ़फ़्व वल्आ़फ़ियत फ़ी दीनी व दुन्याय व अह्ली व माली। अल्लाहुम्मस्तुर औ़राती, व आमिन रौआ़ती, अल्लाहुम्महफ़ज़्नी मिम् बैनि यदय्य व मिन् ख़ल्फ़ी, व अ़न् यमीनी व अ़न् शिमाली व मिन् फ़ौक़ी, व अऊ़ज़ु बिअ़ज़मतिक अन् उग़्ताला मिन् तह्ती।

अर्थः ऐ अल्लाह! मैं तुझसे माफ़ी और आ़फ़ियत का सवाल करता हुँ अपने दीन और दुनिया और परिवार और माल के बारे में। ऐ अल्लाह! मेरे ऐबों को छिपा दे, और मुझे डर व ख़ौफ़ से मह्फ़ूज़ रख। ऐ अल्लाह! मेरी हिफ़ाज़त कर मेरे आगे पीछे से तथा दायें बायें से और ऊपर से। और तेरी अ़ज़मत की पनाह चाहता हूँ कि मैं नीचे से उचक लिया जाऊँ।

اللَّهُمَّ عَافِنِي فِي بَدَنِي، اللَّهُمَّ عَافِنِي فِي سَمْعِي، اللَّهُمَّ عَافِنِي فِي بَصَرِي، لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ. اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْكُفْرِ وَالْفَقْرِ وَمِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ، لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ.

उच्चारण: अल्लाहुम्म आफ़िनी फ़ी बदनी, अल्लाहुम्म आफ़िनी फ़ी समूई, अल्लाहुम्म आफ़िनी फ़ी बसरी, ला इलाह इल्ला अन्त। अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ु बिक मिनल् कुफ़्रि वल्फ़क़्रि व मिन् अज़ाबिल् क़ब्रि, ला इलाह इल्ला अन्त।

अर्थ: ऐ अल्लाह! मुझे मेरे बदन में आफ़ियत दे। ऐ अल्लाह! मुझे मेरे कानों में आफ़ियत दे। ऐ अल्लाह! मुझे मेरी आँखों में आफ़ियत दे। तेरे सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं। ऐ अल्लाह! मैं कुफ़्र और मुहताजगी और क़ब्र के अज़ाब से तेरी पनाह चाहता हूँ। तेरे सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं।

اللَّهُمَّ أَنْتَ رَبِّي، لَا إِلَهَ إِلَّا أَنْتَ، خَلَقْتَنِي، وَأَنَا عَبْدُكَ وَأَنَا عَلَى عَهْدِكَ وَوَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ، أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ، أَبُوءُ لَكَ بِنِعْمَتِكَ عَلَيَّ، وَأَبُوءُ لَكَ بِذَنْبِي، فَاغْفِرْ لِي، فَإِنَّهُ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوبَ إِلَّا أَنْتَ.

उच्चारण: अल्लाहुम्म अन्त रब्बी, ला इलाह इल्ला अन्त, ख़लक़्तनी, व अना अब्दुक व अना अला अह्दिक व वअ्दिक मस्ततअ्तु, अऊज़ु बिक मिन् शर्रि मा सनअ्तु, अबूउ लक बिनिअ्मतिक अलैय, व अबूउ लक बिज़म्बी, फ़ग़्फ़िर्ली, फ़इन्नहु ला यग़फ़िरुज़्ज़ुनूब इल्ला अन्त।

अर्थ: ऐ अल्लाह! तू ही मेरा रब है, तेरे सिवा कोई सच्चा माबूद नहीं, तू ने मुझे पैदा किया, और मैं तेरा बंदा हूँ और मैं अपनी ताक़त के अनुसार तेरे प्रतिज्ञा तथा वादे पर क़ायम हूँ। मैं ने जो कुछ किया उसकी बुराई से तेरी पनाह चाहता हूँ, अपने ऊपर नेमत का इक़रार करता हूँ और अपने गुनाहों का इक़रार करता हूँ, पस तू मुझे माफ़ कर दे, क्योंकि तेरे सिवा कोई पापों को नहीं माफ़ कर सकता।

اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْهَمِّ وَالْحَزَنِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنَ الْعَجْزِ وَالْكَسَلِ، وَمِنَ الْبُخْلِ وَالْجُبْنِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ غَلَبَةِ الدَّيْنِ وَقَهْرِ الرِّجَالِ.

उच्चारणः अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ु बिक मिनल् हम्मि वल्हज़नि, व अऊज़ु बिक मिनल् अज्ज़ि वल्कसलि, व मिनल् बुख़्लि वल्जुब्नि, व अऊज़ु बिक मिन् ग़लबतिद्दैनि व क़हरिर्रिजाल।

अर्थः ऐ अल्लाह! तेरी पनाह चाहता हूँ चिंता और ग़म से, और तेरी पनाह चाहता हूँ आजिज़ी, सुस्ती, कंजूसी और बुज़दिली से, और तेरी पनाह चाहता हूँ क़र्ज़ के ग़लबा से और लोगों के दबाव से।

اللَّهُمَّ اجْعَلْ أَوَّلَ هَذَا الْيوم صَلاَحاً، وَأَوسَطَهُ فَلاَحاً، وَآخِرَهُ نَجَاحاً، وَأَسْأَلُكَ خَيْرَيِ الدُّنْيَا وَالآخِرَةِ يَا أَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ.

उच्चारणः अल्लाहुम्मज्अल् अव्वल हाज़ल्यौमि सलाहन व औसतहु फ़लाहन व आख़िरहु नजाहा। व अस्अलुक ख़ैरइद्दुन्या वल्आख़िरति या अर्हमर् राहिमीन।

अर्थः ऐ अल्लाह! तू इस दिन के पहले पहर को दुरुस्तगी, बीचले पहर को कामयाबी और आख़िरी पहर को नजात का ज़रीया बना दे। ऐ कृपा करने वालों में सबसे ज़्यादा कृपा करने वाला! मैं तुझ से दुनिया और आख़िरत की भलाई का सवाल करता हूँ।

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الرِّضَى بَعْدَ الْقَضَاءِ، وَبَرْدَ الْعَيْشِ بَعْدَ الْمَوتِ، وَلَذَّةَ النَّظَرِ إِلَى وَجْهِكَ الْكَرِيمِ، وَالشَّوْقَ إِلَى لِقَاءِكَ فِي غَيْرِ ضَرَّاءِ مُضِرَّةٍ، وَلاَ فِتْنَةٍ مُضِلَّةٍ، وَأَعُوذُ بِكَ أَنْ أَظْلِمَ أَوْ أُظْلَمَ، أَوْ أَعْتَدِيَ أَوْ يُعْتَدَى عَلَيَّ، أَوْ أَكْتَسِبَ خَطِيْئَةً أَوْ ذَنْباً لاَ تَغْفِرُهُ.

उच्चारणः अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुकर् रिज़ा बअ्दल् क़ज़ा, व बर्दल् अैशि बअ्दल् मौत, व लज़्ज़तन् नज़रि इला वजहिकल् करीम, वश्शौक़ इला लिक़ाइक फ़ी ग़ैरि ज़राइ मुज़िर्रह, व ला फ़ित्नति मुज़िल्लह, व अऊज़ु बिक अन् अज़्लिम औ उज़्लम, औ अअ्तदिय औ युअ्तद अ़लैय, औ अक्तसिब ख़तीअतन् औ ज़म्बन् ला तग़्फ़िरुहु।

अर्थः ऐ अल्लाह! बेशक मैं तुझ से तेरे फ़ैसले पर राज़ी रहने, मौत बे बाद की ज़िंदगी की ठंडक, तेरे करीम चेहरे की ओर देखने की लज़्ज़त और तेरी मुलाक़ात के शौक़ का सवाल करता हूँ, बिना किसी तक्लीफ़ देने वाली मुसीबत और गुमराह करने वाले फ़ितने के। और मैं तेरी पनाह चाहता हूँ ज़ुल्म करने या किये जाने से, अथवा ज़्यादती करने या ज़्यादती किये जाने से, अथवा गुनाह कमाने या ऐसा पाप करने से जिसे तू माफ़ नहीं करता है।

اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ أَنْ أُرَدَّ إِلَى أَرْذَلِ الْعُمُرِ. اللَّهُمَّ اهْدِنِي لأَحْسَنِ الأَعْمَالِ وَالْأَخْلَاقِ، لَا يَهْدِي لِأَحْسَنِهَا إِلَّا أَنْتَ، وَاصْرِفْ عَنِّي سَيِّئَهَا، لَا يَصْرِفُ عَنِّي سَيِّئَهَا إِلَّا أَنْتَ.

उच्चारणः अल्लाहुम्म इन्नी अऊ़ज़ु बिक अन् उरद्द इला अर्ज़लिल उ़मुर, अल्लाहुम्मह्दिनी लिअह्सनिल् अअ्मालि वल्अख़्लाक़, ला यह्दी लिअह्सनिहा इल्ला अन्त, वस्रिफ़् अ़न्नी सैइअहा, ला यस्रिफ़ु अ़न्नी सैइअहा इल्ला अन्त।

अर्थः ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ बद तरीन उ़म्र की तरफ़ लौटाये जाने से। ऐ अल्लाह! मुझे सबसे अच्छे आमाल और अख़्लाक़ की ओर हिदायत दे, और सबसे अच्छे आमाल व अख़्लाक़ की ओर हिदायत तेरे सिवा कोई नहीं दे सकता। और मुझ से बुरे आमाल व अख़्लाक़ दूर कर दे, तेरे सिवा कोई भी मुझ से बुरे आमाल व अख़्लाक़ दूर नहीं कर सकता।

اللَّهُمَّ أَصْلِحْ لِي دِيْنِي، وَوَسِّعْ لِي فِي دَارِي، وَبَارِكْ لِي فِي رِزْقِي. اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْقَسْوَةِ وَالْغَفْلَةِ وَالذِّلَّةِ وَالْمَسْكَنَةِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنَ الْكُفْرِ وَالْفُسُوقِ وَالشِّقَاقِ وَالسُّمْعَةِ وَالرِّيَاءِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنَ الصَّمَمِ وَالْبُكْمِ وَالْجُذَامِ وَسَيِّئِ الأَسْقَامِ.

उच्चारणः अल्लाहुम्म अस्लिह् ली दीनी व वस्सिअ् ली फ़ी दारी व बारिक् ली फ़ी रिज़्क़ी, अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ु बिक मिनल् क़स्वति वल्ग़फ़्लति वज़्ज़िल्लति वल्मस्कनह, व अऊज़ु बिक मिनल् कुफ़्रि वल्फ़ुसूक़ि वश्शिक़ाक़ि वस्सुम्अति वर्रिया व अऊज़ु बिक मिनस्समिम वल्बुक्मि वल्जुज़ामि व सैयिइल अस्क़ाम।

अर्थः ऐ अल्लाह! मेरे लिए मेरे दीन को सुधार दे, और मेरे लिए मेरे घर में कुशादगी प्रदान कर, और मेरे लिए मेरे रिज़्क़ में बर्कत अ़ता फ़र्मा। ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ सख़्ती, ग़फ़्लत, ज़िल्लत और रुसवाई से। और तेरी पनाह चाहता हूँ कुफ़्र, बद्कारी, दुश्मनी, शुह्रत और रिया से। और मैं तेरी पनाह चाहता हूँ बह्रापन, गूंगापन, कूढ़ी और बुरी बीमारी से।

اللَّهُمَّ آتِ نَفْسِي تَقْوَاهَا، وَزَكِّهَا أَنْتَ خَيْرُ مَنْ زَكَّاهَا، أَنْتَ وَلِيُّهَا وَمَوْلَاهَا.

उच्चारणः अल्लाहुम्म आति नफ़्सी तक़्वाहा, व ज़क्किहा अन्त ख़ैरु मन् ज़क्काहा, अन्त वलिय्युहा व मौलाहा।

अर्थः ऐ अल्लाह! प्रदान कर मेरे नफ़्स को उसकी परहेज़गारी, और उसको पाक-साफ़ कर दे, तू ही सबसे अच्छा पाक-साफ़ करने वाला है, तू ही उसका वली और मौला है।

اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ عِلْمٍ لَا يَنْفَعُ، وَمِنْ قَلْبٍ لَا يَخْشَعُ، وَنَفْسٍ لَا تَشْبَعُ، وَدَعْوَةٍ لَا يُسْتَجَابُ لَهَا.

उच्चारणः अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ु बिक मिन् इ़ल्मिन् ला यन्फ़अ़्, व मिन् क़ल्बिन ला यख़्शअ़्, व नफ़्सिन् ला तश्बअ़्, व दअ़्वतिन् ला युस्तजाबु लहा।

अर्थः ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ उस इल्म से जो नफ़ा न दे, और उस दिल से जो न डरे, और उस नफ़्स से जो आसूदा न हो, और उस दुआ से जो क़बूल न की जाए।

اللَّهُمَّ إنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا عَمِلْتُ، وَمِنْ شَرِّ مَا لَمْ أَعْمَلْ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا عَلِمْتُ، وَ مِنْ شَرِّ مَا لَمْ أَعْلَمْ.

उच्चारणः अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ु बिक मिन् शर्रि मा अ़मिल्तु, व मिन् शर्रि मा लम् अअ़्मल्, व अऊज़ु बिक मिन् शर्रि मा अ़लिम्तु, व मिन् शर्रि मा लम् अअ़्लम्।

अर्थः ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ उस चीज़ की बुराई से जो मैं ने किया, और उस चीज़ की बुराई से जो मैं ने नहीं किया। और तेरी पनाह चाहता हूँ उस चीज़ की बुराई से जिसका इल्म मुझे हुआ, और उस चीज़ की बुराई से जिसका इल्म मुझे नहीं हुआ।

اللَّهُمَّ إنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ زَوَالِ نِعْمَتِكَ، وَتَحَوُّلِ عَافِيَتِكَ، وَفُجَاءَةِ نِقْمَتِكَ، وَجَمِيعِ سَخَطِكَ.

उच्चारणः अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ु बिक मिन् ज़वालि निअ़्मतिक, व तहव्वुलि आ़फ़ियतिक, व फ़ुजाअति निक़्मतिक, व जमीइ सख़तिक।

अर्थः ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ तेरी नेमत के ज़ायेल होने, तेरी आ़फ़ियत के बदलने, तेरी सज़ा के अचानक आने और तेरी सारी नाराज़गी से।

اللَّهُمَّ إنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنَ الْهَدْمِ وَالتَّرَدِّي، وَمِنَ الْغَرَقِ وَالْحَرِيقِ وَالْهَرَمِ، وَأَعُوذُ بِكَ أَنْ يَتَخَبَّطَنِي الشَّيْطَانُ عِنْدَ الْمَوْتِ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ أَنْ أَمُوتَ لَدِيغًا، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ طَمَعٍ يَهْدِي إِلَى طَبَعٍ.

उच्चारणः अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ु बिक मिनल् हद्मि वत्तरद्दी व मिनल् ग़रक़ि वल्ह़रीक़ि वल्हरम, व अऊज़ु बिक अन् यतख़ब्बत़नियश् शैतानु इ़न्दल् मौत, व अऊज़ु बिक मिन् अन् अमूत लदीग़न् व अऊज़ु बिक मिन् तमइ़न् यह्दी इला तब्अ्।

अर्थः ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ वीरान होने, गिरने, डूबने, जलने तथा बुढ़ापे से। और तेरी पनाह चाहता हूँ इस बात से कि मौत के वक़्त शैतान मुझे पागल बना दे। और मैं तेरी पनाह चाहता हूँ डसा हुआ मरने से। और तेरी पनाह चाहता हूँ उस लालच से जो बुरी प्रकृति की तरफ़ ले जाती है।

اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ مُنْكَرَاتِ الْأَخْلَاقِ وَالْأَعْمَالِ وَالْأَهْوَاءِ وَالْأَدْوَاءِ، أَعُوذُ بِكَ مِنْ غَلَبَةِ الدَّيْنِ، وَقَهْرِ الْعَدُوِّ، وَشَمَاتَةِ الأَعْدَاءِ.

उच्चारणः अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ु बिक मिम्मुन्करातिल् अख़्लाक़ि वल्अअ्मालि वल्अह्वाइ वल्अद्वा, अऊज़ु बिक मिन् ग़लबतिद्दैनि व क़ह्रिल् अ़दुव्वि व शमातातिल् अअ्दा।

अर्थः ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ बुरे अख़्लाक़, बुरे आमाल, बुरी ख़ाहिशात और बुरी बीमारियों से। मैं तेरी पनाह चाहता हूँ क़र्ज़ के ग़लबा, दुश्मन के दबाव और दुश्मनों के हँसने से।

اللَّهُمَّ أَصْلِحْ لِي دِينِي الَّذِي هُوَ عِصْمَةُ أَمْرِي، وَأَصْلِحْ لِي دُنْيَايَ الَّتِي فِيهَا مَعَاشِي، وَأَصْلِحْ لِي آخِرَتِي الَّتِي إِلَيهَا مَعَادِي، وَاجْعَلِ الْحَيَاةَ زِيَادَةً لِي فِي كُلِّ خَيْرٍ، وَاجْعَلِ الْمَوْتَ رَاحَةً لِي مِنْ كُلِّ شَرٍّ، رَبِّ أَعِنِّي وَلَا تُعِنْ عَلَيَّ، وَانْصُرْنِي وَلَا تَنْصُرْ عَلَيَّ، وَاهْدِنِي وَيَسِّرِ الْهُدَى لِي.

उच्चारणः अल्लाहुम्म अस्लिह् ली दीनी अल्लज़ी हुव इ़स्मतु अम्री,

व अस्लिह् ली दुन्यायल्लती फ़ीहा मआ़शी, व अस्लिह् ली आख़िरती अल्लती इलैहा मआ़दी, वज्अ़लिल् हयात ज़ियादतल् ली फ़ी कुल्लि ख़ैर, वज्अ़लिल् मौत राहतल् ली मिन् कुल्लि शर्र, रब्बि अइ़न्नी वला तुइ़न् अ़लैय, वन्सुर्नी वला तन्सुर् अ़लैय, वह्दिनी व यस्सिरिल् हुदा ली।

अर्थ: ऐ अल्लाह! मेरे लिए मेरे दीन को सुधार दे जो मेरी सबसे अहम चीज़ है, और मेरे लिए मेरी दुनिया सुधार दे जिस में मेरी रोज़ी है, और मेरे लिए मेरी आख़िरत सुधार दे जिसकी ओर मुझे लौट कर जाना है। और ज़िंदगी को मेरे लिए हर भलाई में ज़्यादती का ज़रीया बना दे और मौत को मेरे लिए हर बुराई से राहत बना दे। ऐ मेरे रब! मेरी सहायता कर और मेरे ख़िलाफ़ दूसरे की सहायता न कर, और मेरी मदद फ़रमा और मेरे ख़िलाफ़ दूसरे की मदद न फ़रमा, और मुझे हिदायत दे तथा मेरे लिए हिदायत को आसान कर दे।

اللَّهُمَّ اجْعَلْنِي ذَكَّارًا لَكَ، شَكَّارًا لَكَ، مِطْوَاعًا لَكَ، مُخْبِتًا إِلَيْكَ، أَوَّاهًا مُنِيبًا، رَبِّ تَقَبَّلْ تَوْبَتِي، وَاغْسِلْ حَوْبَتِي، وَأَجِبْ دَعْوَتِي، وَثَبِّتْ حُجَّتِي، وَاهْدِ قَلْبِي، وَسَدِّدْ لِسَانِي، وَاسْلُلْ سَخِيمَةَ صَدْرِي.

उच्चारण: अल्लाहुम्मज्अ़ल्नी ज़क्कारन् लक, शक्कारन् लक, मित्वाअ़न् लक, मुख़्बितन् इलैक, अव्वाहम् मुनीबा, रब्बि तक़ब्बल तौबती, वग़्सिल् हौबती, व अजिब् दअ़्वती, व सब्बित् हुज्जती, वह्दि क़ल्बी, व सद्दिद् लिसानी, वस्लुल् सख़ीमत सद्री।

अर्थ: ऐ अल्लाह! मुझे तेरा बहुत ज़्यादा ज़िक्र करने वाला, तेरा बहुत ज़्यादा शुक्र करने वाला, तेरी फ़र्माबर्दारी करने वाला, तेरी तरफ़ आ़जिज़ी करने वाला, बहुत आहें करने वाला और झुकने वाला बना दे। ऐ मेरे रब! मेरी तौबा क़बूल फ़रमा, मेरे गुनाहों को धुल दे, मेरी दुआ़

क़बूल फ़रमा, मेरी हुज्जत साबित कर दे, मेरे दिल को हिदायत दे, मेरी ज़बान को ठीक कर दे और मेरे सीने की स्याही को निकाल दे।

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الثَّبَاتَ فِي الأَمْرِ، وَأَسْأَلُكَ عَزِيمَةَ الرُّشْدِ، وَأَسْأَلُكَ شُكْرَ نِعْمَتِكَ، وَحُسْنَ عِبَادَتِكَ، وَأَسْأَلُكَ قَلْبًا سَلِيمًا، وَلِسَانًا صَادِقًا، وَأَسْأَلُكَ مِنْ خَيْرِ مَا تَعْلَمُ، وَأَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَا تَعْلَمُ، وَأَسْتَغْفِرُكَ مِمَّا تَعْلَمُ، وَأَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوبِ.

उच्चारणः अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुकस्सबात फ़िल्अम्रि, व अस्अलुक अ़ज़ीमतर रुश्द, व अस्अलुक शुक्र निअ्मतिक, व हुस्न इ़बादतिक, व अस्अलुक क़ल्बन् सलीमा, व लिसानन् सादिक़ा, व अस्अलुक मिन् ख़ैरि मा तअ्लमु, व अऊज़ु बिक मिन् शर्रि मा तअ्लमु, व अस्तग़्फ़िरुक मिम्मा तअ्लमु व अन्त अ़ल्लामुल् ग़ुयूब।

अर्थः ऐ अल्लाह! तुझसे सवाल करता हूँ काम में अटल रहने का और हिदायत पर जमे रहने का। और तुझसे सवाल करता हूँ तेरी नेमत पर शुक्र का और तेरी इबादत अच्छी तरह अदा करने का। और तुझसे सवाल करता हूँ क़ल्बे सलीम (प्रशांत हृदय) का और सच्ची ज़बान का। और तुझसे सवाल करता हूँ उस भलाई का जिसको तू जानता है। और तेरी पनाह चाहता हूँ उस बुराई से जिसको तू जानता है। और माफ़ी चाहता हूँ तुझसे उस गुनाह से जिसको तू जानता है, और तू ही ग़ैबों की ख़बर रखने वाला है।

اللَّهُمَّ أَلْهِمْنِي رُشْدِي وَقِنِي شَرَّ نَفْسِي.

उच्चारणः अल्लाहुम्म अल्हिम्नी रुश्दी व क़िनी शर्र नफ़्सी।

अर्थः ऐ अल्लाह! मुझे मेरी हिदायत अ़ता कर, और मुझे मेरे नफ़्स की बुराई से बचा।

اللَّهُمَّ إنِّي أَسْأَلُكَ فِعْلَ الْخَيْرَاتِ وَتَرْكَ الْمُنْكَرَاتِ، وَحُبَّ الْمَسَاكِينِ، وَأَنْ تَغْفِرَ لِي وَتَرْحَمَنِي، وَإِذَا أَرَدْتَ بِعِبَادِكَ فِتْنَةً فَتَوَفَّنِي إِلَيْكَ مِنْهَا غَيْرَ مَفْتُونٍ، اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ حُبَّكَ وَحُبَّ مَنْ يُحِبُّكَ وَحُبَّ عَمَلٍ يُقَرِّبُ إِلَى حُبِّكَ.

उच्चारण: अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक फेअ्लल् ख़ैराति व तर्कल् मुन्करात, व हुब्बल् मसाकीन, व अन् तग़्फ़िर ली व तर्हमनी, व इज़ा अरद्त बिइबादिक फ़ित्नतन् फ़तवफ़्फ़नी इलैक मिन्हा ग़ैर मफ़्तून्, अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक हुब्बक व हुब्ब मैंयुहिब्बुक व हुब्ब अ़मलिन् युक़र्रिबु इला हुब्बिक।

अर्थ: ऐ अल्लाह! मैं तुझसे सवाल करता हूँ नेक काम करने और बुरे काम छोड़ने, ग़रीबों से महब्बत करने और तेरी मग़्फ़िरत तथा रह्मत का। और जब तू अपने बंदों को किसी फ़ित्ना में डालना चाहे तो मुझे फ़ित्ना से मुक्त करके मौत दे। ऐ अल्लाह! मैं तुझसे सवाल करता हूँ तेरी महब्बत, तुझसे महब्बत करने वालों से महब्बत और उस अमल से महब्बत का जो तेरी महब्बत तक पहूँचा दे।

اللَّهُمَّ إنِّي أَسْأَلُكَ خَيْرَ الْمَسْأَلَةِ، وخَيْرَ الدُّعَاءِ، وَخَيْرَ النَّجَاحِ، وَخَيْرَ الثَّوَابِ، وَثَبِّتْنِي وثَقِّلْ مَوَازِينِي، وَحَقِّقْ إِيمَانِي، وَارْفَعْ دَرَجَتِي، وَتَقَبَّلْ صَلاَتِي، وَاغْفِرْ خَطِيئَاتِي، وَأَسْأَلُكَ الدَّرَجَاتِ الْعُلَى مِنَ الْجَنَّةِ.

उच्चारण: अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक ख़ैरल् मस्अलह, व ख़ैरद् दुआ़, व ख़ैरन् नजाह्, व ख़ैरस् सवाब, व सब्बित्नी व सक़्क़िल् मवाज़ीनी, व हक़्क़िक़ ईमानी, वर्फ़अ् दरजती, व तक़ब्बल् सलाती, वग़्फ़िर् ख़त़ीआती, व अस्अलुकद् दरजातिल् उ़ला मिनल् जन्नह।

अर्थ: ऐ अल्लाह! मैं तुझसे सवाल करता हूँ बेहतरीन भीक, बेहतरीन दुआ़, बेहतरीन कामयाबी और बेहतरीन नेकी का। और तू मुझे साबित

क़दम रख, मेरे (नेकी के) पल्ले को भारी कर दे, मेरे ईमान को साबित कर दे, मेरे दर्जे को बुलंद कर दे, मेरी नमाज़ क़बूल फ़रमा और मेरे गुनाहों को बख़्श दे। और मैं तुझसे सवाल करता हूँ जन्नत के बुलंद दरजात का।

اللَّهُمَّ إنِّي أَسْأَلُكَ فَوَاتِحَ الْخَيْرِ، وَخَوَاتِمَهُ، وَجَوَامِعَهُ، وَأَوَّلَهُ وَآخِرَهُ، وَظَاهِرَهُ وَبَاطِنَهُ، وَالدَّرَجَاتِ الْعُلَى مِنَ الْجَنَّةِ.

उच्चारणः अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक फ़वातिहल् ख़ैर, व ख़वातिमह, व जवामिअ़ह, व अव्वलहु व आख़िरह, व ज़ाहिरहु व बातिनह, वद्दरजातिल् उ़ला मिनल् जन्नह।

अर्थः ऐ अल्लाह! मैं तुझसे सवाल करता हूँ भलाई की शुरूआ़त, उसके ख़ातमे, उसके जवामेअ़ (जिसके अल्फ़ाज़ कम और मअ़ना बहुत हों) उसके अव्वल, उसके आख़िर, उसके ज़ाहिर और उसके बातिन का, (और सवाल करता हूँ) जन्नत के बुलंद दरजात का।

اللَّهُمَّ إنِّي أَسْأَلُكَ أَنْ تَرفَعَ ذِكْرِي، وَتَضَعَ وِزْرِي، وَتُطَهِّرَ قَلْبِي، وَتُحَصِّنَ فَرْجِي، وَتَغْفِرَ لِي ذَنْبِي، وَأَسْأَلُكَ الدَّرَجَاتِ الْعُلَى مِنَ الْجَنَّةِ.

उच्चारणः अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक अन् तर्फ़अ़ ज़िक्री, व तज़अ़ विज़्री, व तुत़ह्हिर क़ल्बी, व तुह़स्सिन फ़र्जी, व तग़्फ़िर ली ज़म्बी, व अस्अलुकद् दरजातिल् उ़ला मिनल् जन्नह।

अर्थः ऐ अल्लाह! मैं तुझसे सवाल करता हूँ मेरा ज़िक्र बुलंद करने, मेरा बोझ दूर करने, मेरा दिल पाक करने, मेरी शरमगाह की हिफ़ाज़त करने और मेरे गुनाहों के माफ़ करने का। और सवाल करता हूँ जन्नत के बुलंद दरजात का।

اللَّهُمَّ إنِّي أَسْأَلُكَ أنْ تُبَارِكَ فِي سَمْعِي، وَفِي بَصَرِي، وَفِي رُوْحِي، وَفِي خَلْقِي، وَفِي خُلُقِي، وَفِي أَهْلِي، وَفِي مَحْيَايَ، وَفِي عَمَلِي، وَتَقَبَّلْ حَسَنَاتِي، وَأَسْأَلُكَ الدَّرَجَاتِ الْعُلَى مِنَ الْجَنَّةِ.

उच्चारणः अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक अन् तुबारिक फ़ी समूई, व फ़ी बसरी, व फ़ी रूही, व फ़ी ख़ल्क़ी, व फ़ी ख़ुलुक़ी, व फ़ी अह्ली, व फ़ी मह्याय, व फ़ी अ़मली, व तक़ब्बल् हसनाती, व अस्अलुकद् दरजातिल् उ़ला मिनल् जन्नह।

अर्थः ऐ अल्लाह! मैं तुझसे मेरे कान, मेरी निगाह, मेरी रूह, मेरी ख़िल्क़त, मेरे अख़्लाक़, मेरे परिवार, मेरी ज़िंदगी, और मेरे अमल में बर्कत अ़ता करने का सवाल करता हूँ। और मेरी नेकियों को क़बूल फ़रमा। और तुझसे जन्नत के बुलंद दरजात का सवाल करता हूँ।

اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ جَهْدِ الْبَلاَءِ، وَدَرَكِ الشَّقَاءِ، وَسُوءِ الْقَضَاءِ، وَشَمَاتَةِ الأَعْدَاءِ.

उच्चारणः अल्लाहुम्म इन्नी अऊ़ज़ु बिक मिन् जह्दिल् बला, व दरकिश् शक़ा, व सूइल् क़ज़ा, व शमाततिल् अअ़्दा।

अर्थः ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ आज़माइश की सख़्ती से, और नुहूसत के पाने से, और बुरे फ़ैसले से, और दुश्मनों के हँसने से।

اللَّهُمَّ مُقَلِّبَ الْقُلُوبِ ثَبِّتْ قَلْبِي عَلَى دِينِكَ، يا مُصَرِّفَ الْقُلُوبِ وَالأَبْصَارِ، صَرِّفْ قُلُوبَنَا عَلَى طَاعَتِكَ.

उच्चारणः अल्लाहुम्म मुक़ल्लिबल् क़ुलूब, सब्बित् क़ल्बी अ़ला दीनिक, या मुसर्रिफ़ल् क़ुलूबि वल्अब्सार, सर्रिफ़ क़ुलूबना अ़ला ताअ़तिक।

अर्थः ऐ दिल को पलटने वाला अल्लाह! मेरे दिल को तेरे दीन पर अटल रख। ऐ दिलों और निगाहों का फेरने वाला! हमारे दिलों को तेरी फ़रमाबर्दारी की ओर फेर दे।

اللَّهُمَّ زِدْنَا وَلَا تَنْقُصْنَا، وَأَكْرِمْنَا وَلَا تُهِنَّا، وَأَعْطِنَا وَلَا تَحْرِمْنَا، وَآثِرْنَا وَلَا تُؤْثِرْ عَلَيْنَا.

उच्चारणः अल्लाहुम्म ज़िद्ना व ला तन्क़ुस्ना व अक्रिम्ना व ला तुहिन्ना व अअ्तिना व ला तह्रिम्ना व आसिर्ना वला तुअ्सिर् अ़लैना।

अर्थः ऐ अल्लाह! हमें ज़्यादा दे कम न दे, और हमें इज़्ज़त बख़्श रुस्वा न कर, और हमें प्रदान कर मह्रूम न कर, और हमें प्राथमिकता (तर्जीह) दे दूसरों को हम पर प्राथमिकता न दे।

اللَّهُمَّ أَحْسِنْ عَاقِبَتَنَا فِي الْأُمُورِ كُلِّهَا وَأَجِرْنَا مِنْ خِزْيِ الدُّنْيَا وَعَذَابِ الْآخِرَةِ.

उच्चारणः अल्लाहुम्म अह्सिन् आ़क़िबतिना फ़िल्उमूरि कुल्लिहा व आजिर्ना मिन् ख़िज़इद्दुन्या व अ़ज़ाबिल् आख़िरह।

अर्थः ऐ अल्लाह! हर कामों में हमारा अंजाम अच्छा कर और हमें दुनिया की रुस्वाई तथा आख़िरत के अज़ाब से बचा।

اللَّهُمَّ اقْسِمْ لَنَا مِنْ خَشْيَتِكَ مَا تَحُولُ بَيْنَنَا وَبَيْنَ مَعَاصِيكَ، وَمِنْ طَاعَتِكَ مَا تُبَلِّغُنَا بِهِ جَنَّتَكَ، وَمِنَ الْيَقِينِ مَا تُهَوِّنُ بِهِ عَلَيْنَا مَصَائِبَ الدُّنْيَا، وَمَتِّعْنَا بِأَسْمَاعِنَا وَأَبْصَارِنَا وَقُوَّاتِنَا مَا أَحْيَيْتَنَا، وَاجْعَلْهَا الْوَارِثَ مِنَّا، وَاجْعَلْ ثَأْرَنَا عَلَى مَنْ ظَلَمَنَا، وَانْصُرْنَا عَلَى مَنْ عَادَانَا، وَلَا تَجْعَلِ الدُّنْيَا أَكْبَرَ هَمِّنَا وَلَا مَبْلَغَ عِلْمِنَا، وَلَا تَجْعَلْ مُصِيبَتَنَا فِي دِينِنَا، وَلَا تُسَلِّطْ عَلَيْنَا بِذُنُوبِنَا مَنْ لَا يَخَافُكَ وَلَا يَرْحَمُنَا.

उच्चारण: अल्लाहुम्मक़्सिम् लना मिन् ख़श्यतिक मा तहूलु बैनना व बैन मआसीक व मिन् ताअतिक मा तुबल्लिग़ुना बिहि जन्नतक, व मिनल् यक़ीनि मा तुहव्विनु बिहि अलैना मसाइबद् दुन्या, व मत्तिअ्ना बिअस्माइना व अब्सारिना व क़ुव्वातिना मा अह्ययतना, वज्अल्हुल् वारिस मिन्ना, वज्अल् सअ्रना अला मन् ज़लमना, वन्सुर्ना अला मन् आदाना, वला तज्अलिद्दुन्या अक्बर हम्मिना वला मब्लग़ इल्मिना, वला तज्अल् मुसीबतना फ़ी दीनिना, वला तुसल्लित् अलैना बिज़ुनूबिना मन् ला यख़ाफ़ुक वला यर्हमुना।

अर्थ: ऐ अल्लाह! हमें अपने डर से हिस्सा अता फ़रमा, जो हमारे और तेरी नाफ़रमानी के बीच रुकावट बने। और अपनी फ़रमाबर्दारी से इस क़दर कि जिसके साथ तू हमें जन्नत में पहूँचा दे। और इस क़दर यक़ीन से मालामाल कर कि हम पर दुनिया की मुसीबतें आसान हो जायें। और हमारे कानों, निगाहों तथा क़ुव्वत से मरते दम तक फायदा उठाने का मौक़ा दे और इसको हमारा वारिस बना। और हमारा इंतिक़ाम उन लोगों तक महूदूद रहे जो हम पर ज़ुल्म करें। और हमको हमारे दुश्मनों पर ग़लबा अता फरमा। और दुनिया को हमारा सबसे बड़ा मक़्सद न बना और न ही वह हमारे इल्म की इंतिहा हो। और हमारे दीन के बारे में हमें मुसीबत में न डाल। और हमारे गुनाहों के सबब हमारे ऊपर ऐसे लोगों को मुसल्लत न कर जो न तुझसे डरें और न हम पर रहम करें।

اللَّهُمَّ إنِّي أَسْأَلُكَ مُوجِبَاتِ رَحْمَتِكَ، وَعَزَائِمَ مَغْفِرَتِكَ، وَالْغَنِيمَةَ مِنْ كُلِّ بِرٍّ، وَالسَّلامَةَ مِنْ كُلِّ شَرٍّ، وَالْفَوزَ بِالْجَنَّةِ، وَالنَّجَاةَ مِنَ النَّارِ.

उच्चारण: अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक मूजिबाति रह्मतिक व अज़ाइम

मग़्फ़िरतिक वल्ग़नीमत मिन् कुल्लि बिर्र, वस्सलामत मिन् कुल्लि शर्र वल्फ़ौज़ बिल्जन्नति वन्नजात मिनन्नार।

अर्थः ऐ अल्लाह! मैं तुझसे सवाल करता हूँ तेरी रह्मत के अस्बाब व वसाएल, तेरी मग़्फ़िरत के इरादे, हर नेकी की क़द्र, हर बुराई से हिफ़ाज़त, जन्नत की कामयाबी और दोज़ख़ से नजात का।

اللَّهُمَّ لاَ تَدَعْ لِي ذَنْبًا إِلَّا غَفَرْتَهُ، وَلاَ عَيْباً إِلاَّ سَتَرْتَهُ، وَلَا هَمًّا إِلَّا فَرَّجْتَهُ، وَلاَ دَيْناً إِلاَّ قَضَيْتَهُ، وَلَا حَاجَةً مِنْ حَوَائِجِ الدُّنْيَا وَالآخِرَةِ هِيَ لَكَ رِضًا وَلَنَا صَلاَحٌ إِلاَّ قَضَيْتَهَا يَا أَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ.

उच्चारणः अल्लाहुम्म ला तदअ् ली ज़म्बन् इल्ला ग़फ़र्तह व ला ऐ़बन इल्ला सतर्तह, वला हम्मन् इल्ला फ़र्रज्तह, वला दैनन् इल्ला क़ज़ैतह, वला हाजतम् मिन् हवाइजिद्दुन्या वल्आख़िरति हिय लक रिज़ा व लना सलाह इल्ला क़ज़ैतहा या अर्हमर् राहिमीन।

अर्थः ऐ अल्लाह! तू हमारे सारे गुनाहों को माफ़ फ़रमा, हमारे सारे ऐबों को छिपा ले, सारे ग़मों को दूर कर दे, सारे क़र्ज़ों को अदा कर दे और दुनिया तथा आख़िरत की सारी ज़रूरतें जिन में तेरी रिज़ामंदी हो और हमारे लिए भलाई हो पूरी कर दे, ऐ कृपा करने वालों में सबसे ज़्यादा कृपा करने वाला!

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ رَحْمَةً مِنْ عِنْدِكَ تَهْدِي بِهَا قَلْبِي، وَتَجْمَعُ بِهَا أَمْرِي، وَتَلُمُّ بِهَا شَعْثِي، وَتَحْفَظُ بِهَا غَائِبِي، وَتَرْفَعُ بِهَا شَاهِدِي، وَتُبَيِّضُ بِهَا وَجْهِي، وَتُزَكِّي بِهَا عَمَلِي، وَتُلْهِمُنِي بِهَا رُشْدِي، وَتَرُدُّ بِهَا الْفِتَنَ عَنِّي، وَتَعْصِمُنِي بِهَا مِنْ كُلِّ سُوءٍ.

उच्चारणः अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक रह्मतम् मिन् इ़न्दिक तह्दी बिहा क़ल्बी, व तज्मउ़ बिहा अम्री, व तलुम्मु बिहा शअ्सी, व तह्फ़ज़ु बिहा

ग़ाइबी, व तर्फ़उ बिहा शाहिदी, व तुबैइजु बिहा वज्ही, व तुज़क्की बिहा अ़मली, व तुल्हिमुनी बिहा रुश्दी, व तरुद्दु बिहाल् फ़ितन अ़न्नी व तअ़्सिमुनी बिहा मिन् कुल्लि सूअ्।

अर्थः ऐ अल्लाह! मैं तुझसे सवाल करता हूँ तेरी उस रह्मत का जिसके ज़रीया तू मेरे दिल को हिदायत दे, मेरे काम को इकट्ठा करे, मेरी परागंदगी को जमा करे, मेरे ग़ाएब की हिफ़ाज़त करे, मेरे हाज़िर को बुलंद करे, मेरे चेहरा को सफ़ेद (रौशन) करे, मेरे अमल को पाक-साफ़ करे, मुझे मेरी हिदायत अ़ता करे, मुझसे फ़ित्नों को दूर करे और मुझको हर बुराई से बचाए।

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الْفَوْزَ يومَ الْقَضَاءِ، وَعَيْشَ السُّعَدَاءِ، وَمَنْزِلَ الشُّهَدَاءِ، وَمُرَافَقَةَ الأَنْبِيَاءِ، وَالنَّصْرَ عَلَى الأَعْدَاءِ.

उच्चारणः अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुकल् फ़ौज़ यौमल् क़ज़ा, व अ़ैशस्सुअ़दा, व मन्ज़िलश्शुह्दा, व मुराफ़क़तल् अम्बिया, वन्नस्र अ़लल् अअ़्दा।

अर्थः ऐ अल्लाह! मैं तुझसे फ़ैसला के दिन कामयाबी, सआ़दतमंदों का ऐ़श व आराम, शहीदों का दर्जा, नबियों की रिफ़ाक़त और दुश्मनों पर ग़ल्बा का सवाल करता हूँ ।

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ صِحَّةً فِي إِيمَانٍ، وَإِيمَانًا فِي حُسْنِ خُلُقٍ، وَنَجَاحاً يَتْبَعُهُ فَلاَحٌ، وَرَحْمَةً مِنْكَ، وَعَافِيَةً مِنْكَ، وَمَغْفِرَةً مِنْكَ، وَرِضْوَاناً.

उच्चारणः अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक सिह्हतन् फ़ी ईमान, व ईमानन् फ़ी हुस्नि ख़ुलुक़, व नजाह़न् यत्बअ़ुहु फ़लाह, व रह्मतम् मिन्क, व आ़फ़ियतम् मिन्क, व मग़्फ़िरतम् मिन्क, व रिज़्वाना।

अर्थः ऐ अल्लाह! मैं तुझसे सवाल करता हूँ ईमान में दुरुस्ती, हुस्ने अख़्लाक़ में ईमान, नजात वाली कामयाबी का, और तेरी रहमत, तेरी आफ़ियत, तेरी मग़्फ़िरत और रिज़ा का।

اللَّهُمَّ إِنِّي أَسْأَلُكَ الصِّحةَ وَالْعِفَّةَ، وَحُسْنَ الْخُلُقِ، وَالرِّضَا بِالْقَدَرِ.

उच्चारणः अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुकस् सिह्हत वल्इफ़्फ़ह, व हुस्नल् ख़ुलुक़, वर्रिज़ा बिल्क़दर।

अर्थः ऐ अल्लाह! मैं तुझसे तंदुरुस्ती, पाकदामनी, अच्छे अख़्लाक़ और तक़्दीर पर राज़ी रहने का सवाल करता हूँ।

اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُوذُ بِكَ مِنْ شَرِّ نَفْسِي، وَمِنْ شَرِّ كُلِّ دَابَّةٍ أَنْتَ آخِذٌ بِنَاصِيَتِهَا، إِنَّ رَبِّي عَلَى صِرَاطٍ مُسْتَقِيمٍ.

उच्चारणः अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ु बिक मिन् शर्रि नफ़्सी, व मिन् शर्रि कुल्लि दाब्बतिन् अन्त आख़िज़ुम् बिनासियतिहा, इन्न रब्बी अ़ला सिरातिम् मुस्तक़ीम।

अर्थः ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ अपने नफ़्स की बुराई से, और हर उस रेंगने वाले जानवर से जिसकी पेशानी तू ही पकड़ने वाला है। बेशक मेरा रब सीधी राह पर हैं।

اللَّهُمَّ إِنَّكَ تَسْمَعُ كَلَامِي، وَتَرَى مَكَانِي وَتَعْلَمُ سِرِّي وَعَلَانِيَتِي، وَلَا يَخْفَى عَلَيْكَ شَيْءٌ مِنْ أَمْرِي وَأَنَا الْبَائِسُ الْفَقِيرُ، وَالْمُسْتَغِيثُ الْمُسْتَجِيرُ، وَالْوَجِلُ الْمُشْفِقُ الْمُقِرُّ الْمُعْتَرِفُ إِلَيْكَ بِذَنْبِهِ أَسْأَلُكَ مَسْأَلَةَ الْمِسْكِينِ، وَأَبْتَهِلُ إِلَيْكَ ابْتِهَالَ الْمُذْنِبِ الذَّلِيلِ، وَأَدْعُوكَ دُعَاءَ الْخَائِفِ الضَّرِيرِ، دُعَاءَ مَنْ خَضَعَتْ لَكَ رَقَبَتُهُ، وَذَلَّ لَكَ جِسْمُهُ، وَرَغِمَ لَكَ أَنْفُهُ.

उच्चारणः अल्लाहुम्म इन्नक तस्मउ़ कलामी, व तरा मकानी, व तअ़्लमु

सिर्री व अ़लानियती, वला यख़फ़ा अ़लैक शैउम् मिन् अम्री, व अनल् बाइसुल् फ़क़ीर, वल्मुस्तग़ीसुल् मुस्तजीर, वल्वजिलुल् मुश्फ़िकुल् मुक़िर्रुल् मुअ्तरिफु इलैक बिज़म्बिह, अस्अलुक मस्अलतल् मिस्कीन, व अब्तहिलु इलैकब्तिहालल् मुज़्निबिज् ज़लील, व अद्ऊक दुआ़अल् ख़ाइफ़िज् ज़रीर, दुआ़अ मन् ख़ज़अ़त् लक रक़्बतुह, व ज़ल्ल लक जिस्मुह, व रग़िम लक अन्फुह।

अर्थः ऐ अल्लाह! तू मेरी हर बात सुनता है, और मेरे ठिकाने को देखता है, और मेरे बातिन और ज़ाहिर से ख़ोब वाक़िफ़ है, मेरी कोई चीज़ तुझ पर पोशीदा नहीं है। और मैं तेरे दर का भिखारी, कंगाल, फ़क़ीर, फ़रियाद करने वाला, पनाह पकड़ने वाला, डरने वाला, अपने क़ुसूर का इक़्रार करने वाला हूँ, मैं एक अद्ना ज़लील मिस्कीन बन कर तुझसे माँगता हूँ और मैं एक ख़ार रुस्वा गुनाहगार की तरह तेरी तरफ़ गिड़गिड़ाता हूँ, मैं तुझे एक डरने वाले मुसीबत ज़दह की तरह पुकारता हूँ जिसकी गर्दन तेरे सामने झुक गई है, जिसके आँसू तेरे लिए बह पड़े हैं, जिसका जिस्म तेरे लिए ज़लील हो गया, जिसकी नाक तेरे लिए ख़ाक आलूद हो गई है।

وَصَلَّى الله عَلَى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَعَلَى آلِهِ وَصَحْبِهِ وَسَلَّمَ.

व सल्लल्लाहु अ़ला सैइदिना मुहम्मद व अ़ला आलिहि व सह्बिहि व सल्लम।

हमारे सरदार मुहम्मद, उनके परिवार-परिजन और उनके साथियों (सहाबा) पर दुरूद व सलाम नाज़िल हो।

IslamHouse.com

Hindi.IslamHouse @IslamHouseHi IslamHouseHi https://islamhouse.com/hi/

IslamHouseHi

For more details visit
www.GuideToIslam.com

GUIDE TO ISLAM

contact us :Books@guidetoislam.com

GuidetoIslam.org Guidetoislam1 Guidetoislam www.Guidetoislam.com

المكتب التعاوني للدعوة وتوعية الجاليات بالربوة

هاتف : ٩٦٦١١٤٤٥٤٩٠٠+ فاكس : ٩٦٦١١٤٩٧٠١٢٦+ ص ب : ٢٩٤٦٥ الرياض : ١١٤٥٧

ISLAMIC PROPAGATION OFFICE IN RABWAH

P.O.BOX 29465 RIYADH 11457 TEL: +966 11 4454900 FAX: +966 11 4970126

ह़ज्ज, उ़म्रह व मस्जिदे नबवी की ज़ियारत संबंधी गाइड

इस किताब में हैः ♦ इस्लाम से ख़ारिज करने वाली बातें ♦ उम्रह का तरीक़ा ♦ हज्ज का विवरण ♦ मस्जिदे नबवी की ज़ियारत ♦ ग़लतियाँ जिनका इर्तिकाब बाज़ हाजी करते हैं ♦ दुआ़एं।

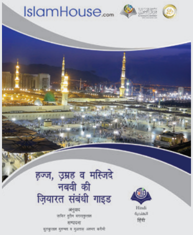

IslamHouse.com
Osoul Center
www.osoulcenter.com
Rabwah